बहुवचन

ज्ञान शांति मैत्री

60

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

जनवरी–मार्च 2019

बहुवचन
अंक : 60 (जनवरी-मार्च 2019) ISSN- 2348-4586
प्रकाशक : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)

संपादकीय संपर्क :
संपादक बहुवचन
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
गांधी हिल्स, पोस्ट- हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा- 442001 (महाराष्ट्र)
मो. संपादक- 7888048765, 09422386554, ईमेल- bahuvachan.wardha@gmail.com
E-mail : amishrafaiz@gmail.com

प्रकाशन प्रभारी : राजेश कुमार यादव
ईमेल- rajeshkumaryadav97@gmail.com फोन- 07152-232943, मो. 09975467897

© संबंधित लेखकों एवं रचनाकारों द्वारा सुरक्षित
प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक एवं विश्वविद्यालय की स्वीकृति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा या संपादकों की सहमति अनिवार्य नहीं है।

पत्रिका न मिलने की शिकायत इस पते पर करें :
प्रचार प्रसार : सुरेश कुमार यादव
फोन : 07152-232943, मो. 09730193094, ईमेल- s.ujala80@gmail.com

बिक्री और प्रसार कार्यालय :
प्रकाशन विभाग, **महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय**
गांधी हिल्स, पोस्ट- हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा- 442001 (महाराष्ट्र) भारत
फोन : 07152-232943, फैक्स : 07152-230903

वार्षिक सदस्यता के लिए बैंक ड्राफ्ट **महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय** के नाम से, जो वर्धा में देय हो, ऊपर लिखित बिक्री कार्यालय के पते पर भेजें। मनीऑर्डर स्वीकार्य नहीं।

यह अंक : रु. 200/-
सामान्य अंक : 75/- वार्षिक शुल्क रु. 300/-, द्विवार्षिक शुल्क रु. 600/- व्यक्तिगत
संस्थाओं के लिए वार्षिक शुल्क रु. 400/-, द्विवार्षिक रु. 800/- (डाक खर्च सहित)
विदेश में : हवाई डाक : एक प्रति 15 अमेरिकी डॉलर/7 ब्रिटिश पाउंड
समुद्री डाक : एक प्रति 8 डॉलर/5 ब्रिटिश पाउंड
आवरण : वेदप्रकाश भारद्वाज

BAHUVACHAN
A QUARTERLY INTERNATIONAL JOURNAL IN HINDI
PUBLISHED BY: MAHATMA GANDHIANTARRASHTRIYA HINDI VISHWAVIDYALAYA
GANDHI HILLS, POST-HINDI VISHWAVIDYALAYA, WARDHA-442001 (MAHARASHTRA) INDIA.

मुद्रण : क्विक ऑफसेट ई-17, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032 (फोन : 011-22824606, मो. 9811388579)

शंकरानंद 108
प्रांजल धर 111

कला

कला की गतिशीलता/प्रयाग शुक्ल 115

संवाद

'दलित-मुक्ति का सवाल आज भी संक्रमण के दौर से गुजर रहा है' 122
(देवेंद्र चौबे से इकरार अहमद-मीनाक्षी की बातचीत)

आलोचना

अँधेरे में छुपी रोशनी की तलाश (संदर्भ : और पसीना बहता रहा)/शंभु गुप्त 127
आत्मप्रकटीकरण की नई दिशाएं संभावनाएं/ कुबेर कुमावत 131
भारतीय मिथक और हिंदी गजल/ज्ञानप्रकाश विवेक 141
'ऐ लड़की' में कृष्णा सोबती की जीवन-दृष्टि/गरिमा श्रीवास्तव 153
असमिया कथा-साहित्य का तीन दशक: कतिपय वैशिष्ट्य/सूर्यकांत त्रिपाठी 164
भूदान की ज्ञान-मीमांसा/मिथिलेश कुमार 168

असमिया कथा-साहित्य का तीन दशक

सूर्यकांत त्रिपाठी

सन् 1940 से 1970 पर्यंत कुल तीन दशक की कथाओं के वैशिष्ट्य को प्रकाशित करने का प्रयास प्रस्तुत आलेख में किया गया है। इस काल को रामधेनु युग के नाम से डॉ. धर्मदेव तिवारी ने अपनी पुस्तक असमिया साहित्य में उद्घृत किया है।1 (तिवारी, डॉ. धर्मदेव, असमिया साहित्य, पृ. सं. 80)। असमिया साहित्य में रामधेनु युग की शुरुआत तकरीबन 1940 से मानी जाती है। द्वितीय महायुद्ध के पश्चात असम के जातीय जीवन में बहुशः बदलाव आया और सन् 1942 के स्वतंत्रता संग्राम के कारण असम का जन-जीवन आंदोलित हो उठा। इस प्रकार युद्ध का जो कुप्रभाव समाज पर पड़ा उससे असम का कथा-साहित्य भी अछूता न रहा और इस काल के कथाकारों ने अपने-अपने ढंग से समाज की विकृतियों पर दृष्टिपात करते हुए अपनी लेखनी चलाई। इस युग के कथाकारों में विशेष रूप से लक्ष्मीनाथ बरा, विनोद शर्मा, चित्रलता फूकन, होमेन बरगोहाई, सैयद अब्दुल मालिक, वीरेंद्र भट्टाचार्य, रिजु हजारिका, जमीरूद्दीन अहमद, रूनु बरूआ, यतीन बरा,चंद्रप्रकाश शइकीया, अनुपमा बरगोहाई, नीलिमा शर्मा, लक्ष्मीनाथ बेजबरूआ, महीचंद्र बरा, लक्ष्मीधर शर्मा, राधिका मोहन गोस्वामी, कृष्ण भुइयां, त्रैलोक्य नाथ गोस्वामी, सौरभ कुमार चालिहा, पद्म बरकटकी, महेंद्र बरठाकुर, राजेंद्रनाथ हजारिका, लक्ष्मीनंदन बरा, रूद्रप्रसाद काकती, रोहिणी कुमार काकती, निरूपमा बरगोहाई, मामनि रायसम गोस्वामी, प्रणीता बेबी, आरतिदास वैरागी, अनिमादत्त भराली, रत्न ओझा, स्नेह देवी प्रभृति उल्लेखनीय है। तद्युगीन कथा-साहित्य विशिष्टताओं को अधोलिखित सांचों में रखकर देखा और परखा जा सकता है-

सामाजिक परिवेश :

सामाजिक परिवेश को ध्यान में रखकर हर युग का साहित्यकार पुरानी रूढ़ियों, अंधविश्वासों को छोड़कर नई परिस्थितियों को अपनाता है। यथार्थवादी सभ्यता के प्रभाव से हमारा समाज किस प्रकार बदला है और उसका प्रतिफल वर्तमान और भविष्य पर क्या हो रहा है और क्या होगा को इंगित कर कथाकार लक्ष्मीनाथ बरा ने 'देवतार व्याधि' एवं 'गुरु पर्व' जैसी कहानियों के द्वारा प्रकट किया है। इसी प्रकार अपनी 'रूपांतर' तथा 'भेकुरीर पुंज' कहानियों के माध्यमों से विनोद शर्मा ने समाज में परिव्याप्त ऊंच-नीच, जाति-पांत जैसी बुराईयों पर प्रहार किया है। इस काल के कथाकारों में शोषितों के प्रति संवेदना, सहानुभूति और शोषकों के प्रति आक्रोश बखूबी देखा जा सकता है। चित्रलता फूकन, होमेन बरगोहाई आदि कथाकारों का नाम इस रूप में विशेष उल्लेखनीय है। इस

व्यंग्य यात्रा

सार्थक व्यंग्य की रचनात्मक त्रैमासिकी

वर्ष : 15 अंक : 58-59

संयुक्तांक

जनवरी-जून 2019

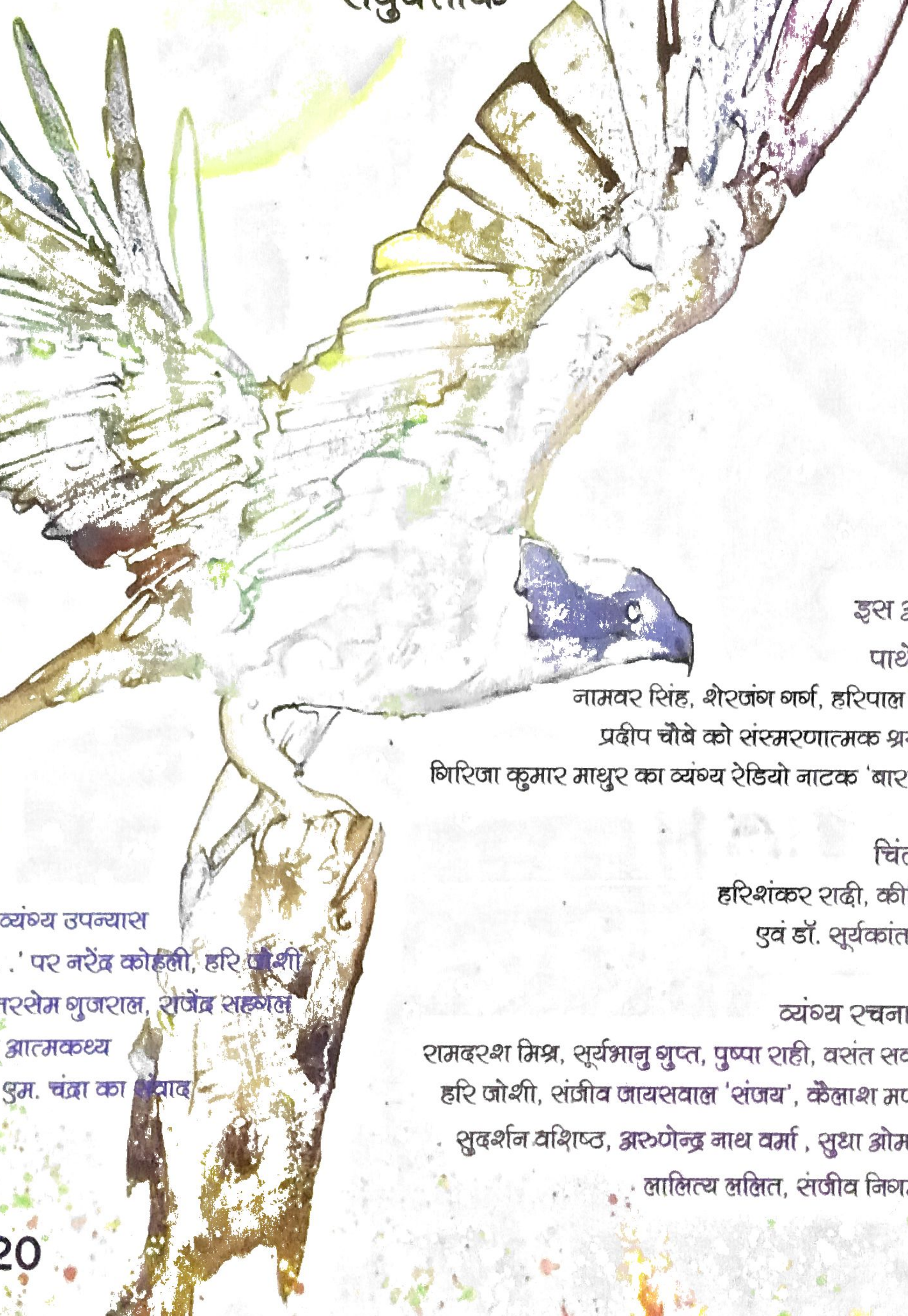

इस अंक में

पाथेय में-
नामवर सिंह, शेरजंग गर्ग, हरिपाल त्यागी,
प्रदीप चौबे को संस्मरणात्मक श्रद्धांजलि
गिरिजा कुमार माथुर का व्यंग्य रेडियो नाटक 'बारात चढ़े'

चिंतन में-
हरिशंकर राढ़ी, कीर्ति शर्मा
एवं डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी

व्यंग्य रचनाओं में-
रामदरश मिश्र, सूर्यभानु गुप्त, पुष्पा राही, वसंत सकरगाए,
हरि जोशी, संजीव जायसवाल 'संजय', कैलाश मण्डलेकर
सुदर्शन वशिष्ठ, अरुणेन्द्र नाथ वर्मा, सुधा ओम ढींगरा,
लालित्य ललित, संजीव निगम आदि।

त्रिकोणीय में
सुरेश कांत के व्यंग्य उपन्यास
'जॉब बची सो...' पर नरेंद्र कोहली, हरि जोशी
प्रेम जनमेजय, तरसेम गुजराल, राजेंद्र सहगल
सुरेश कांत का आत्मकथ्य
और उनसे एम. एम. चंद्रा का संवाद

मूल्य ₹ 20

व्यंग्य यात्रा

सार्थक व्यंग्य की रचनात्मक त्रैमासिकी

जनवरी-जून 2019 संयुक्तांक

वर्ष-15 अंक-58-59

एक अंक : 20 रुपए
पांच अंक : सौ रुपए
विदेशों में : 5 डॉलर प्रति अंक

सहयोग राशि 'व्यंग्य यात्रा' के नाम से ही भेजने का कष्ट करें। दिल्ली से बाहर के चेक पर बीस रुपए अतिरिक्त जोडें।

'केन्द्रीय हिंदी संस्थान' आगरा से आर्थिक सहयोग प्राप्त।

संपादक

प्रेम जनमेजय

संपर्क
73, साक्षर अपार्टमेंट्स
ए-3 पश्चिम विहार
नई दिल्ली-110063
फोन : 011-470233944, 09811154440
ई-मेल :
vyangya@yahoo.com
premjanmejai@gmail.com

आवरण - मंजीत चात्रिक की कलाकृति पर आधारित
आवरण सज्जा- विपिन कुमार

प्रबंध सहयोग
रामविलास शास्त्री
4, शॉपिंग कॉम्प्लैक्स दयालबाग
सूरजकुंड, फरीदाबाद (हरियाणा)
मोबाइल : +91 9911077754

'व्यंग्य यात्रा' में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। विवादास्पद मामले दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे। संपादन एवं संचालन पूर्णत: अवैतनिक और अव्यावसायिक।

अनुक्रम

आरंभ 1–3

चंदन घिसें 4–8

पाथेय 9–28
. . . नामवर सिंह द्वारा व्यंग्य चर्चा
व्यंग्य आमजन का सबसे बड़ा हथियार 9-11
राकेश अचल-
प्रदीप चौबे: एक कहकहे का अवसान 12
प्रेम जनमेजय-
शेरजंग गर्ग: मरने के प्रतिकूल जीने वाला 13-16
हीरालाल नागर-
व्यंग्य हरिपाल त्यागी के बोलचाल में था 16
गिरिजा कुमार माथुर- बारात चढ़े 17-26
निशा नाग-
माथुर जी के रेडियो नाटकों में निहित व्यंग्य 27-28

त्रिकोणीय 29–51
प्रेम जनमेजय 30
सुरेश कांत सुरेश कांत रचनाएं ही मुझे लिखती हैं 31-35
सुरेश कांत 'जॉब बची सो. . .' का एक अंश 36-38
नरेन्द्र कोहली विचित्र जंतुओं का धाकड़ शिकारी 39
हरि जोशी- लीक से हटकर 40
तरसेम गुजराल- . . .को बेनकाब करता उपन्यास 41-42
राजेन्द्र सहगल- कार्पोरेट जगत का मायाजाल 43-45
सुरेश कांत से एम.एम. चन्द्रा की बातचीत 46-51

चिंतन 52–58
हरिशंकर राढ़ी-
व्यंग्य की विषयवस्तु और मूल्य 52-54
कीर्ति शर्मा-
अभिव्यक्ति के सारे खतरे उठाने ही होंगे! 55-56
डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी पं. विद्यानिवास मिश्र के व्यंग्य-निबंधों में विशेषण-विधान 57-58

पद्य व्यंग्य 59–64
रामदरश मिश्र की प्रखर काव्याभिव्यक्तियां
अंडकोष, सत्यवादी, बल्ला और कलम. . . 59
सूर्यभानु गुप्त की गजलें और दोहे 60-61
पुष्पा राही, सुधेश, गीता पंडित 62
वसंत सकरगाए, दीप्ति मिश्रा 63
दरवेश भारती, आनंद वि आचार्य
दामिनी यादव, अतुल प्रभाकर 64

व्यंग्य रचनाएं 65–96
संजीव जायसवाल 'संजय'- यत्र-तत्र-सर्वत्र 65-69
हरि जोशी- वैश्विक लालू 70-72
सुधा ओम ढींगरा- नाच मेरे जमूरे कि. . . 73
भरतचंद्र शर्मा- मानहानि की कुत्ता फजीती लें 74
कैलाश मण्डलेकर- लोकगीतों पर शोध और. . . 75-76
रामजी प्रसाद 'भैरव'- चुगलखोरों के नाम पत्र 77
अरुणेन्द्र नाथ वर्मा- संस्कृति का बैताल. . . 78
रामविलास जांगिड़- शिक्षा चली अब पशुओं की ओर 79
ललित कुमार- हनुमान की जाति-
नेशनल रजिस्टर ऑफ गॉड्स 80
सुदर्शन वशिष्ठ- बेस्ट सैलर 81-82
दीपा अल्मोड़ा- वो सुख जो हम ले ना सके. . . 83
लालित्य ललित- पांडेय जी और इलेक्शन. . . 84-85
बजरंग सोनी- सोशल मीडिया- एक नया धर्म 86-87
अजय जोशी- मुझसे अच्छा न कोय. . . 88
सजीव निगम- भूखे के आगे कल्पना है 89
घनश्याम अग्रवाल- तेरा नाम क्या है 89
राजेशखर चौबे- फेक राईटर 90
हर्षवर्द्धन वर्मा- चुनाव 91
अलंकार रस्तोगी- 'सब कुछ मिल जाएगा' 92
रश्मि- 'जब नेता न मिले' 93
कमलेश भारतीय- स्मृति चिह्न 93
नीरज नीर- बंसत के बहाने 94
सुदर्शन कुमार सोनी- एक वोटर के हसीन सपने 95-96
रासबिहारी गौड़- पहले दांव, अब दावे 96

इधर जो पढ़ा 97– 104
रमेश तिवारी- प्रामाणिक दस्तावेज है- अर्थागमन 97-98
पारुल सिंह- रोचकता की खूशबू से महकते पन्ने 99
सूर्यबाला- पचरतंत्र की कथाएं 100
उमाशंकर परमार- यह गांव बिकाऊ है. . . 100
सुधीर ओखद- जीभ अनशन पर हे 101
मधु आचार्य आशावादी- पांच कृतियां 101
मलय जैन- पड़ताल करता उपन्यास 'तन्त्र कथा' 102
कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकों की सूचना 103
शिवना प्रकाशन की नई पुस्तकें 104

समाचार 105 –112

अब आप
आर.टी.जी.एस.
द्वारा
'व्यंग्य यात्रा'
को अपना
आर्थिक सहयोग दे सकते हैं।

खाताधारक का नाम : व्यंग्य यात्रा
बैंक का नाम : केनेरा बैंक
शाखा- पश्चिम विहार, ए-ब्लाक
खाता संख्या : 3223201000092
IFSC Code : CNRB0003223

वर्ष-15 पंजीयन संख्या : DELHIN/2004/15013 अंक-58-59

ISSN 2348-4209

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के कुछ महत्वपूर्ण प्रकाशन

नीरजा माधवः
संकलित कहानियां

₹ 280.00 पृ. 250
ISBN 978-81-237-8160-0

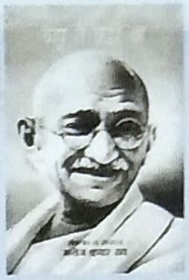

बापू ने कहा था

संकलन व संपादन :
मनोज कुमार राय

₹ 240.00 पृ. 227
ISBN 978-81-237-8183-9

अशांत विश्व में भारत की सुरक्षा
जसजीत सिंह
अनुवाद :
डॉ. परितोष मालवीय

₹ 190.00 पृ. 172
ISBN 978-81-237-8165-5

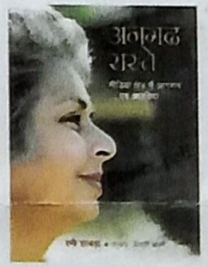

अनगढ़ रास्ते :
मीडिया क्षेत्र में आगमन एवं अलविदा
रमी छाबड़ा
अनुवाद :
दीपाली ब्राह्मी

₹ 705.00 पृ. 468
ISBN 978-81-237-8206-3

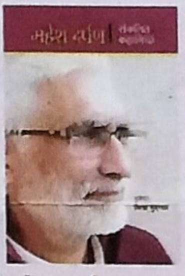

महेश दर्पणः
संकलित कहानियां

₹ 255.00 पृ. 224
ISBN 978-81-237-8104-4

लोककला नवनीत
(लोककला विषयक निबंध-संग्रह)
संकलन व संपादन :
डॉ. अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद'

₹ 240.00 पृ. 212
ISBN 978-81-237-8163-1

फन्नी ढाबा

अनुज त्यागी

₹ 120.00 पृ. 88
ISBN 978-81-237-8206-3

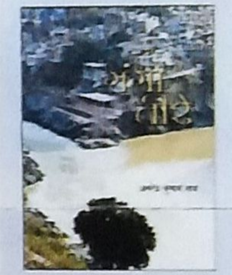

गंगा तीरे

अमरेंद्र कुमार राय

₹ 126.00 पृ. 150
ISBN 978-81-237-8164-8

पुस्तकों पर 10 प्रतिशत की छूट

आज ही खरीदें...

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की पुस्तकें यहाँ उपलब्ध हैं :
मुख्य कार्यालय
nbt.india
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 (भारत)
दूरभाष : 91-11-26707700 । फैक्स : 91-11-26707846 वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

नई दिल्ली । मुंबई । बेंगलुरु । कोलकाता । चेन्नै । हैदराबाद । गुवाहाटी । अगरतला । पटना । कटक । एर्णाकुलम

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ॰ प्रेम प्रकाश की ओर से सचदेवा प्रिंट आर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड, 44, राजस्थानी उद्योगनगर, जी॰टी॰ करनाल रोड, दिल्ली-110033 द्वारा मुद्रित एवं 73, साक्षर अपार्टमेंट्स, ए-3, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110063 से प्रकाशित
संपादक : प्रेम जनमेजय

डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी

पं. विद्यानिवास मिश्र के व्यंग्य-निबंधों में विशेषण-विधान

श्रेष्ठ व्यंग्य प्रभावकारी तभी हो सकता है, जब उसमें शिष्टता, शालीनता एवं साहित्यिकता हो। 'शुगर कॉटेड पिल' की तरह व्यंग्य मधुवेष्ठित होना चाहिए। व्यंग्य में सपाटपन न होकर वक्रता होनी चाहिए। व्यंग्य जब सपाट होता है तो वह खुली निंदा या गाली-गलौज का रूप ले लेता है। प्रसिद्ध अंग्रेज व्यंग्यकार ड्राइडन ने श्रेष्ठ व्यंग्य को परिभाषित करते हुए लिखा है, 'किसी व्यक्ति के निर्ममता से टुकड़े-टुकड़े कर देने में तथा एक व्यक्ति के सर को सफाई से धड़ से अलग करके अलग लटका देने में बहुत अंतर है। एक सफल व्यंग्यकार अप्रस्तुत एवं प्रच्छन्न विधान की शैली में अपने भावों को व्यक्त कर देता है। वह क्रोध की अभिव्यक्ति आलंकारिक एवं सांकेतिक भाषा में करता है ताकि पाठक अपना स्वतंत्र निष्कर्ष निकाल सके। व्यंग्यकार अपने व्यक्तित्व को व्यंग्य से अलग कर लेता है ताकि व्यंग्य कल्पना के सहारे अपने स्वतंत्र रूप में कला एवं साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश कर सके।' संक्षिप्तता के विषय में प्रो. गुडमैन का मत है, 'प्रभावकारी व्यंग्य तीर के समान होना चाहिए जो कि कम से कम समय में लक्ष्य को भेद दे। थोड़े में बहुत कह देना ही व्यंग्य का गुण है। विस्तार इसके प्रभाव को बंद कर देता है।' (प्रो. गुडमैन, क्यूसेंस ऑफ लिटरेरी एसेस, पृ.सं. 72)।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व आक्रोश, विनोद, अंध-विश्वास और रूढ़वादिता की अपेक्षा 1950 के बाद हुए राजनीतिक, सामाजिक तथा साहित्यिक क्रियाकलाप व्यंग्य लेखों में अधिक उग्र हुए है। पहले की अपेक्षा आज का व्यंग्य अधिक चुटीला और मार्मिक है साथ ही साहित्यकारों के पास अपना आक्रोश व्यक्त करने के लिए एक सशक्त और स्वंतत्र माध्यम भी। स्वतंत्रता के पूर्व देश की जनता ने जो सपने देखे थे, साकार नहीं हुए और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शासन और समाज का एक घिनौना रूप उभरकर सामने आया, जिसकी कल्पना भी जनता को न थी। नतीजतन समाज टूटा, परिवार टूटा और व्यक्ति भी टूटने के कगार पर आ पहुंचा। आदर्श और यर्थाथ की दीवारें टूटी, मानवीय मूल्यों के महल चरमराकर गिर पड़े, अत: व्यक्ति और समाज के बीच एक संघर्ष छिड़ गया, जिसकी प्रतिक्रिया साहित्य के क्षेत्र में व्यंग्य की तीव्रता में प्रकट हुई।

इस वैषम्यपूर्ण आधुनिकता की रिक्तता ने साहित्यकार को समाज के समस्त खोखलेपन को स्वीकारने को विवश कर दिया और वह बर्हिमुखी न रहकर अंर्तमुखी हो गया। इस प्रकार 1950 के बाद जो साहित्यकारों का स्वर मुखर हुआ वह व्यंग्य का संवादी बन गया। परिणामस्वरूप व्यंग्यकारों और व्यंग्य रचनाओं में वृद्धि हुई। अनुभूति की गहनता ने विनोद की बात ही मस्तिष्क में न आने दी और युगीन व्यंग्य सहज ही हास्य से बिछुड़ व्यंग्य की कोटि में आ गया और उत्तरोतर आत्मपरक तथा गहरा होता गया। पं. विद्यानिवास मिश्र के शब्दों में, 'इसीलिए इसे अपना सबसे बड़ा शत्रु अपना मसीहापन ही लगता है। वह अपनी अक्षमता को छिपाना नहीं चाहता, वह संघर्ष करने से नहीं भागता, संघर्ष की तो वह प्रक्रिया है पर संघर्ष की व्यर्थता को वह समझता है। इसीलिए उसका व्यंग्य आत्मपरक है, गहरा है।' (साहित्य की चेतना, पृ.सं.127. 128)। इस युग के व्यंग्य ने जीवन के विभिन्न संदर्भों को स्पर्श करने की कोशिश की है। जीवन-संघर्ष से प्रेरणा प्राप्त कर उत्तरोतर विकसित हुआ है और जीवन की विसंगतियों के थपेड़े से क्रमागत तीक्ष्णतर, तीव्रतर और बौद्धिक हुआ है।

साहित्यिक भाषा में कथन का चयन ऐसा सुगठित होता है कि उस जगह दूसरा प्रयोग करने से यथातथ्य अभिप्रेत अर्थ की अभिव्यंजना संभव नहीं हो पाती। रचनाकार अभिप्रेत अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए पूर्ण मनोयोग से विशेषणों का चयन एवं प्रयोग करता है। विशेषणों के अध्ययन से रचनाकार के अभिव्यक्ति-कौशल का परिचय प्राप्त होता है। विशेषण चाहे जिस रूप में हो (विशेष्य-विधेय, सादृश्य या असादृश्य) वर्णन का समर्थ माध्यम विशेषण ही है। भावना की तीव्रता के कारण विशेषण जब अलभ्य हो जाता है तब विशेषण रहित भाषा का प्रयोग प्राप्त होता है। विशेष्य जहां नहीं प्राप्त हो पाता वहां विशेषण का प्रयोग होता है। इसी प्रकार विशेषणों के प्रयोग, न्यूनाधिक प्रयोग, पुनर्वार प्रयोग और प्रयोग के कौशल को ध्यान में रखकर हम रचनाकार के मानसिक चिंतन की भावभूमि को स्पर्श करने में सक्षम होते हैं।

यद्यपि पं. विद्यानिवास मिश्र ने व्यंग्य विधा में कलम कम चलाई है तथापि उनके जो व्यंग्य निबंध उपलब्ध हैं, वे उच्चकोटि के हैं और तद्युगीन व्यंग्य लेखकों में सर्वाधिक तर्कपूर्ण, तीव्रतर एवं अभिनिवेशी हैं। उनके निबंध संग्रह 'आंगन का पंक्षी और बनजारा मन' (1962) के प्रभुत्व-ज्वर अस्पताल, सदा आनंद रहे यही द्वारे, ड्योढ़े दर्जे का खातिमा, डेरी बनाम खेती, नर

साहित्य कला परिषद्
एवं
'व्यंग्य यात्रा' का आयोजन
2 और 3 जून को
कुल्लू में दूसरा
राष्ट्रीय व्यंग्य महोत्सव
'व्यंग्य का मूल तत्व'
पर विमर्श एवं व्यंग्य रचना पाठ
राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तराखंड, बिहार, मध्यप्रदेश, जम्मू एवं कश्मीर, हरियाणा, पश्चिम बंगाल, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, आदि राज्यों के रचनाकार होंगे सम्मिलित।

हिन्दी अनुशीलन

ISSN 2249-930X

भारतीय हिन्दी परिषद् प्रयाग

वर्ष - 61 जनवरी - जून 2019 अंक 1-2

13. बाणभट्ट की आत्मकथा : आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी 106
डॉ0 सरला पण्ड्या

14. उपन्यास सम्राट की कालजयी कृति 'गोदान' 110
डॉ0 विवेक शंकर

15. भारतीय नारीत्व के गौरव के चितेरे : वृंदावनलाल वर्मा 116
डॉ0 महीपाल सिंह

16. कालजयी कहानी कफन 121
डॉ0 सूर्यकांत त्रिपाठी

17. लोकजीवन के रंग में रँगा मैला आँचल 127
डॉ0 कमला चौधरी

18. रागदरबारी के विडंबनाग्रस्त समाज की व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति 133
प्रो0 शैलेन्द्र शर्मा

19. मानस के हंस के तुलसी 144
डॉ0 अमित कुमार भारती

20. हिन्दी काव्य की ऐतिहासिक ऊर्जा एवं रसदीप्ति 151
डॉ0 निर्मला अग्रवाल

21. कालजयी कृति : गांधी पंचशती 158
डॉ0 कृष्णगोपाल मिश्र

कालजयी कहानी 'कफ़न'

डॉ. सूर्यकान्त त्रिपाठी

साहित्यकार वस्तुपरकता के साथ विभिन्न सामाजिक कारकों का बखूबी बारीकी से जाँच–पड़ताल कर बेबाकी से उद्घाटन करता है। इस वस्तुपरकता का मूलाधार सामाजिक उन्नयन होता है, जबकि साहित्य का हितकर या अहितकर बनना साहित्यकार और सामाजिक व्यवस्था पर निर्भर करता है। आत्मा और आत्मानुभूति के साथ कला और कलानुभूति के नाम पर शताब्दियों से इस साहित्य की रचना हुई। उसमें वास्तविक और उपयोगी रचनाधर्मिता की दृष्टि में समय–समय पर अनिश्चितता की स्थिति भी बनी रही है। साहित्यकार में सामाजिक जीवन और व्यक्तिगत जीवन के अनुभव और प्रतिभा के साथ सामाजिक प्रतिबद्धता का होना भी जरूरी है तभी उससे कालजयी रचना की सृष्टि संभव हो पाती है।

हिन्दी में मुख्य रूप से कहानी, उपन्यास, नाटक और काव्य के क्षेत्र में जो कालजयी कृतियाँ उपलब्ध हैं उनमें 'उसने कहा था', 'कफ़न', 'आकाशदीप', 'पर्दा', 'शरणदाता', 'मलबे का मालिक', 'मेहमान', 'सज़ा', 'जार्ज पंचम की नाक' प्रभृति हिंदी की कालजयी कहानियाँ है। 'गोदान', 'चित्रलेखा', 'झूठा–सच', 'बूँद और समुद्र', 'सारा आकाश', 'राग दरबारी', 'मैला आँचल', 'महाभोज', 'आधा गाँव', तथा 'मुझे चाँद चाहिए' हिंदी के कालजयी उपन्यास हैं। 'ध्रुवस्वामिनी', 'सिंदूर की होली', 'मिस्टर अभिमन्यु' 'अंधा युग', 'आषाढ़ का एक दिन', 'आधे–अधूरे, 'एक और द्रोणाचार्य', 'नेफा' की एक शाम', एवं 'सूरज की अंतिम किरण से सूरज की पहली किरण तक' हिंदी के कालजयी नाटक हैं और 'पृथ्वीराज रासो', 'रामचरित मानस', 'सूरसागर', 'पदमावत', 'शिवराज भूषण', 'कामायनी', 'साकेत', कुरूक्षेत्र', 'यामा', और 'संसद से सड़क तक' हिंदी की कालजयी काव्य–कृतियाँ हैं।

मुशी प्रेमचन्द भारत के शीर्षस्थ एवं कालजयी साहित्यकारों में से एक हैं। समूचे विश्व साहित्य में उनका नाम बड़े ही सम्मानपूर्वक लिया जाता है। उन्होंने गद्य साहित्य की हर विधा में अपनी लेखनी चलायी है किंतु एक सफल कहानीकार और उपन्यास लेखक के रूप में ही उन्हें विशेष ख्याति प्राप्त हो पायी है। प्रेमचंद को अपने जीवनकाल में ही उपन्यास सम्राट की उपाधि मिल गयी थी। उन्होंने अन्य साहित्यकारों के उलट उर्दू–हिंदी की मिली–जुली भाषा का एक नया रूप प्रस्तुत किया। जिसे आगे चलकर हिंदी का मानक रूप मान लिया गया। मात्र भाषा में ही नहीं उन्होंने अपनी रचनात्मकता में भी औरों की तुलना में अपना एक नया पैड़ा पकड़कर चलना शुरू किया। कथा के विषय, पात्र–सृष्टि, उद्देश्य और सरोकार में क्रांतिकारी बदलाव करके एक नये युग (प्रेमचंद युग) का सूत्रपात किया, जिसका कोई

ISSN : 2249-9318
Refereed Research Journal
UGC Approved Journal No: 41389

वर्ष-15 अंक-14 जुलाई-दिसम्बर, 2019

अनुसंधान

छायावाद विशेषांक

सम्पादक
डॉ. राजेश कुमार गर्ग

7. छायावादी युग की 'मतवाली पत्रकारिता' और इलाहाबाद 61
डॉ. धनंजय चोपड़ा
पाठ्यक्रम समन्वयक, सेन्टर ऑफ मीडिया स्टडीज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
उत्तर प्रदेश

8. छायावादी कविता में दलित चिंतन 69
प्रो. संजय एल. मादार
प्रोफेसर, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, धारवाड
कर्नाटक

9. भारत के सांस्कृतिक सूर्योदय का काव्य : निराला का तुलसीदास 74
प्रो. नरेंद्र मिश्र
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर
राजस्थान

10. निरुपमेय ''निरुपमा'' 85
प्रो. सूर्यकांत त्रिपाठी
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर
असम

11. कामायनी में अभिव्यक्त समरसता 90
प्रो. सुनील बाबूराव कुलकर्णी
भाषा अध्ययन प्रशाला, कवित्री बहिनाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगांव
महाराष्ट्र

12. छायावाद के आलोक में पन्त, पल्लव और प्रथम रश्मि 96
प्रो. दीपेन्द्र सिंह जाडेजा
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बडोदरा
गुजरात

13. महादेवी जी का काव्य और वेदना 100
प्रो. हरीश कुमार शर्मा
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, ईटानगर
अरुणाचल प्रदेश

निरुपमेय "निरुपमा"

प्रो. सूर्यकांत त्रिपाठी*

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' छायावाद के प्रमुख स्तम्भों में से एक है। उन्होंने हिन्दी साहित्य की प्रायः हर विधा पर सफलतापूर्वक लेखनी चलायी है। कवि तो वे हैं ही साथ ही छायावादी गद्य के अंतर्गत भी उनका विशिष्ट योगदान है। उनकी गद्य कृतियाँ अपेक्षाकृत साफगोई से प्रेरित हैं। आचार्य नलिन विलोचन शर्मा ने उनके संबंध में अपने विश्वास को प्रकट करते हुए लिखा है– "हमारी दृष्टि में यदि निराला जैसा कवि हिंदी में नहीं लिखता होता, तो हिन्दी राष्ट्रभाषा के सम्मानित पद की अधिकारिणी नहीं हो सकती थी। ....छायावाद के अभिमन्यु थे निराला, लेकिन इस अंतर के साथ कि चक्रव्यूह भेदन करने के बाद वे पराजित नहीं हुए। निराला जी जॉनसन की तरह कर्मठ और अध्यवसायी, लार्डवायरन से उद्भट प्रत्यालोचक, कीट्स और टैगोर की तरह सुकवि और टॉलस्टाय, ह्यूगो और शॉ की तरह निर्भीक उत्क्रांतिकारी औपन्यासिक हैं।"[1]

'निरुपमा' निराला के आदर्श–प्रधान श्रेष्ठ उपन्यासों में से एक है, किसी भी समाज अथवा राष्ट्र के शैक्षणिक स्तर की कमजोरी उसके भविष्यत् की हीनताओं में बदल कर विरोध और विषमता को बढ़ावा देती है। अंग्रेजों की निजी–स्वार्थ–शिक्षा के अंधानुसरण का क्या दुष्परिणाम हो रहा है। इसका अत्यंत मर्मस्पर्शी प्रत्यक्ष 'निरुपमा' में मिलता है। इसके निवेदन में स्वयं लेखक ने लिखा है– "दूसरे उन्नत समाज लेखक की जो सहायता करते हैं वह हिंदी के समाज से प्राप्त नहीं। इसलिए काल्पनिक सृष्टि करनी पड़ती है जैसे समाज की लेखक आशा करता है और जिसका होना संभव भी है अनभ्यस्त और स्वभाव संचालितों को वहाँ अस्वाभाविकता मिलती है पर वह है स्वाभाविक। साथ ही प्रचलित छोटे–छोटे चित्र सहारे के लिए रहते है, साधारणों की समझ में उतना ही आता है।"[2] इससे यह जाहिर है कि उपन्यासकार समाज का आदर्श प्रस्तुत करना चाहता है। इस निमित्त समाज के घृणित, कुत्सित अस्तित्व की कुरुपता और हीनता को देखना भी जरूरी है। इसीलिए निराला ने कथासूत्र का आरंभ वहाँ से किया है जहाँ से उन्नत समाज के आदर्श का अधिकार–वितरण होता है। यह स्थान है विश्वविद्यालय। जिससे शिक्षा ग्रहण करने के लिए कृष्णकुमार के माता–पिता की भाँति शिक्षाभिलाषी युवकों के माता–पिता बहुशः विपत्तियों को झेलते हुए सुविधा प्रदान करते हैं। किंतु जब हम विश्वविद्यालयों की ओर दृष्टि निक्षेप करते है, तो वहाँ लोक गुरुओं की जगह प्रांतवाद, जातिवाद और भाई–भतीजावाद के आधार पर अथवा चरित्रहीन एवं अयोग्य व्यक्तियों को सिद्धि होती दिखाई देती है। लखनऊ विश्वविद्यालय के राजनीति शास्त्र के लेक्चरर डॉ. भड़कंकड़ इसके उदाहरण हैं जो राजनीति शास्त्र की अपनी शिष्या निरुपमा के पास प्रेम–पत्र लिखते हैं, जिसे वह अपनी सहज सरलता के कारण छिपाती नहीं है और अपने मामा योगेश बाबू को देती है। इस वजह से उसकी शैक्षिक प्रगति अवरुद्ध हो जाती है।

---

* *प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम*

ISSN 2394-5303

प्रिंटिंग एरिया ®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Issue-53, Vol-01 May 2019

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Scanned by CamScanner

Index

01) THE POSITION OF ETHICS IN VENTURE CONTROL, SETTLEMENT ....
Mr. Chavan Ganesh Sakharam, Dr.Manishkumar.N.Varma, Pune ||10

02) Life Skills Integrated Curriculum in Schools
Dr. Geetha, K , Sonapur ||14

03) PANCHAYAT RAJ IN KARNATAKA: A STUDY ON THE ELECTIONS ......
Nagendrappa K.T, Dr. Y. Gangadhara Reddy,Bangalore. ||25

04) Problems faced by spinners and weavers for weaving of khadhi clothes....
Dr. A. Sujatha , G.Gunasri, Bodinayakanur. ||36

05) Parental Encouragement among high school students of Jalgaon District
Mrs. Sunita Arvind Jagtap, Chalisgaon ||40

06) Electronic resources and their application and limitations: a study
Kimi, Sadik Husian,Delhi ||43

07) Public Administration in india
Dr.santosh B.Kurhe, Parbhani. ||48

08) Recent trends in Capital Formation in Agriculture
Prof. Dr. T. P. More,Buldana (MS ||51

09) Incest and Adultery in Select novels of Ian McEwan
Deepati Pant, Nainital ||56

10) Pradhan Mantri Mudra Yojana as a tool of Finance Inclusion ......
Pardeep kumar, Gurana (Hisar) ||58

11) Impact of GST on Service Sectors
Prof. Dr. Sangram R. Raghuwanshi, Amravati ||63

12) GENDER INEQUALITY IN HIGHER EDUCATION
Dr.Manjulata, Km. Sapna, Meerut ||65

13) Intellectual property (IP): An Introduction
Miss. Mahadevi P. Shikare,Solapur ||71

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned by CamScanner

14) Concept of Youth Unemployment in India ||73
Dr. Paresh A. Shrimali, Patan

15) Developing Inclusive Practices for Effective Implementation ...... ||76
Ms. Sharmishtha Solanki , Gujarat

16) WATER POLLUTION AND ITS TREATMENT: THE ENVIRONMENT CONCERN ||80
Dr. Usha Kumari, AzamgarhR

17) Impact of Demonetization on Indian Economy ||85
Prof. Warghade Janardhan Bhau,Palghar

18) समाज मनाच्या एकवटलेल्या तिखट उद्‌गाराची कविता ! ||88
प्राचार्य डॉ.वसंत बिरादार,लातूर

19) स्त्रीगीते : कौटुंबिक भावविश्व ||92
डॉ. गौतम झ. ढवळे, लातूर

20) जागतिकीकरणात मराठी भाषेचे संवर्धन ||94
प्रा.डॉ.जगताप उज्वला शिवराम,परभणी

21) डॉ. राममनोहर लोहिया यांचे जातीसंबंधी विचार || 97
प्रा.डॉ. दम एस.आर. ,बीड

22) उच्च शिक्षणाच्या विकासात राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज यांचे योगदान ||100
प्रा.अनंत दादाराव मरकाळे,बीड

23) नागपूर जिल्हयातील आदिवासी शेतक–यांच्या विविध समस्या ||103
शालिनी दुर्गाजी मेन्ढें, डॉ. एम. के. नगरारे ,वर्धा

24) राष्ट्रीय असंसर्गजन्य रोग नियत्रंन कार्यक्रम व त्याअंर्तगत कार्यरत ..... ||114
कु. संगीता ब. रोहनकर, डॉ.सुनिल म. ठाकुरवार

25) ग्रामीण युवकांचे शैक्षणिक, राजकीय स्थिती ज्ञान व विकासात्मक दृष्टीकोन ||120
डॉ. संगीता ओमनाथ तिहीले,अकोला.

26) बंजारा जाति और संगीत ||123
डॉ० वन्दना अग्रवाल,मेरठ

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned by CamScanner

27) मन्नू भंडारी की कहानियों में आधुनिक स्त्री—जीवन का द्वंद्व
अंजु लता,असम ||127

28) विकास कर्म में नारी का योगदान
डा. नीलम गौड, हनुमानगढ ||131

29) संजीव के उपन्यासों में आदिवासी जन-जीवन की समस्याओं का चित्रण
डॉ. लक्ष्मण तुळशीराम काळे, नांदेड ||133

30) माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम ....
डॉ.देवेन्द्र कौर, सादुलशहर ||135

31) समकालीन कवि अज्ञेय एवं मुक्तिबोध की काव्यभाषा का तुलनात्मक अध्ययन
डॉ. पठाण ए.एम., बीड. ||138

32) तबला वादक की कुशलता और सूझबूझपूर्ण संगत से कथक नृत्य में रसोत्पत्ति
शशिकांत शर्मा, प्रो० वन्दना चौबे, राजस्थान ||141

33) जी०ई०मूर: शुभ की अपरिभाष्यता
डॉ०वीना शर्मा, गोरखपुर ||144

34) यथार्थवाद : केदारनाथ अग्रवाल की कविता
रीना यादव, इलाहाबाद ||146

35) मानव गतिविधियाँ और पर्यावरणीय अवकर्ष
डॉ. सुनील बाघला, डॉ. सुरजीत सिंह कस्वाँ, श्रीगंगानगर (राज.) ||149

36) मानवीय क्रियाऐं एवं पर्यावरण में आकस्मिक परिवर्तन
Dr. Rajesh Kumar, Haryan. ||150

37) गांधी विचार के आलोक में महिला सशक्तिकरण
डॉ०शैलेन्द्र तिवारी,वाराणसी ||152

38) भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की योगदान (१८५७—१९४७)
Vikram S/o Randhir Singh,Kurukshetra ||156

39) कौटिल्य के आर्थिक विचारों की वर्तमान में सार्थकता
डॉ निहारिका श्रीवास्तव, प्रतापगढ़ ||160

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned by CamScanner

27

मन्नू भंडारी की कहानियों में आधुनिक स्त्री—जीवन का द्वंद्व

अंजु लता
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम

****

मन्नू भंडारी आजादी के बाद की प्रमुख लेखिकाओं में से एक हैं। यह हिंदी साहित्य का वह दौर था जब आधुनिकता का एक नया रूप हिन्दुस्तान में विकसित हो रहा था। साहित्य में उषा प्रियंवदा और कृष्णा सोबती जैसी लेखिकाएँ अपनी उपस्थिति दर्ज कर चुकी थीं। हिन्दी साहित्य के इतिहास में स्त्री लेखिकाओं को जो जगह अभी तक प्राप्त नहीं हो पाई थी उस कमी को आजादी के बाद की ये लेखिकाएँ सहज ही दूर कर देती हैं। साहित्य पटल पर कई स्त्री लेखिकाओं का आगमन इस युग की प्रमुख विशेषता है। इसका मुख्य कारण इसे माना जा सकता है कि नवजागरण—काल में जिन स्त्री प्रश्नों को लेकर सामाजिक परिवर्तन का जो प्रयास किया गया उसके सीमित दायरे में ही सही लेकिन फायदे जरूर हुए। आजादी के बाद इसके परिणाम और भी प्रत्यक्ष हुए और नब्बे के बाद तो हिन्दी साहित्य में लेखिकाओं ने जबर्दस्त हस्तक्षेप किया है।

मन्नू भंडारी ऐसी संवेदना की लेखिका हैं जिसमें औरत को पूरे सामाजिक परिवेश के आलोक में सहज रूप से समझने और चित्रित करने का प्रयास मिलता है। परंपरा ने हमें औरत के जीवन को दो तरह से देखने की दृष्टि प्रदान की थी। एक नजरिया रीतिकालीन था जहाँ औरत को भोग की वस्तु की तरह देखा गया और दूसरा नजरिया छायावादी था जहाँ स्त्री को मुक्त करने की माँग तो उठायी गई लेकिन उसे देवी, माँ, सहचरी, प्राण की सीमाओं में रखते हुए ही। इन दो तरह की विचारधाराओं और पूँजीवादी परिस्थितियों के बीच फँसी स्त्री समाज में अपना वास्तविक स्थान निर्धारित न कर सकी। इन्हीं परिस्थितियों में विकसित आजादी के बाद का हमारा साहित्य स्त्री को सबसे पहले एक मनुष्य के रूप में देखने पर जोर देता है। अपने समय की विसंगतियों के बावजूद इस दौर का साहित्य स्त्री जीवन के द्वंद्व का दिखाने में काफी हद तक सफल रहा है। परिवार और समाज के बीच फँसी औरत आखिर अपने लिए क्या चुने? परिवार का सामंती चरित्र और बाजार से ग्रस्त समाज दोनों ने औरत की स्वतंत्र छवि को अपने हिसाब से निर्धारित किया। इस दौर का साहित्य किसी प्रकार का आंदोलन भले न करता हो, वह परिवार और समाज के बीच फँसी औरत के जीवन के दर्द को बखूबी रेखांकित करता है।

मन्नू भंडारी इसी भाव को लेकर अपनी कहानियाँ रचती हैं। इनकी कहानियों में आजादी के बाद के नए समाज में विकसित 'आधुनिक' मानव की संवेदना आकार लेती है। इस समाज का अपना अलग यथार्थ था जिसे लेखिका सूक्ष्मता के साथ अपनी कहानियों में रेखांकित करती जाती हैं। इनकी कहानियों में इन नई परिस्थितियों से उपजे द्वंद्व से ग्रस्त पात्रों की भरमार है। खास तौर से 'यही सच है' कहानी संग्रह के माध्यम से प्रकाश में आयी लेखिका की कहानियों में अत्यधिक परिपक्वता दिखाई देती है। इस संग्रह की कहानियाँ नई कहानी आंदोलन में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। नई कहानी आदोंलन आधुनिक मनुष्य के जीवन के द्वंद्व, उसकी विवशता, उसकी निरीहता, सामाजिक—पारिवारिक संबंधों में उसकी मन:स्थिति को प्रकट करने वाला आन्दोलन था। इस चेतना के साहित्य में स्त्री जीवन के विविध पहलू दृष्टिगोचर होते हैं। इन सब के बीच मन्नू भंडारी स्त्री जीवन में प्रेम का एकदम अलग ही स्वरूप लेकर आती हैं। यह स्वरूप परंपरा से एकदम इतर है। 'यही सच है' एक विवादास्पद कहानी है जिसकी नायिका अपने जीवन में आने वाले दो व्यक्तियों के मोहपाश में बँधी हुयी है। एक उसका वर्तमान है

Scanned by CamScanner

ISSN: 2581-5903

শাকবোল

তৃতীয় বর্ষ, প্রথম সংখ্যা, মে ২০১৯

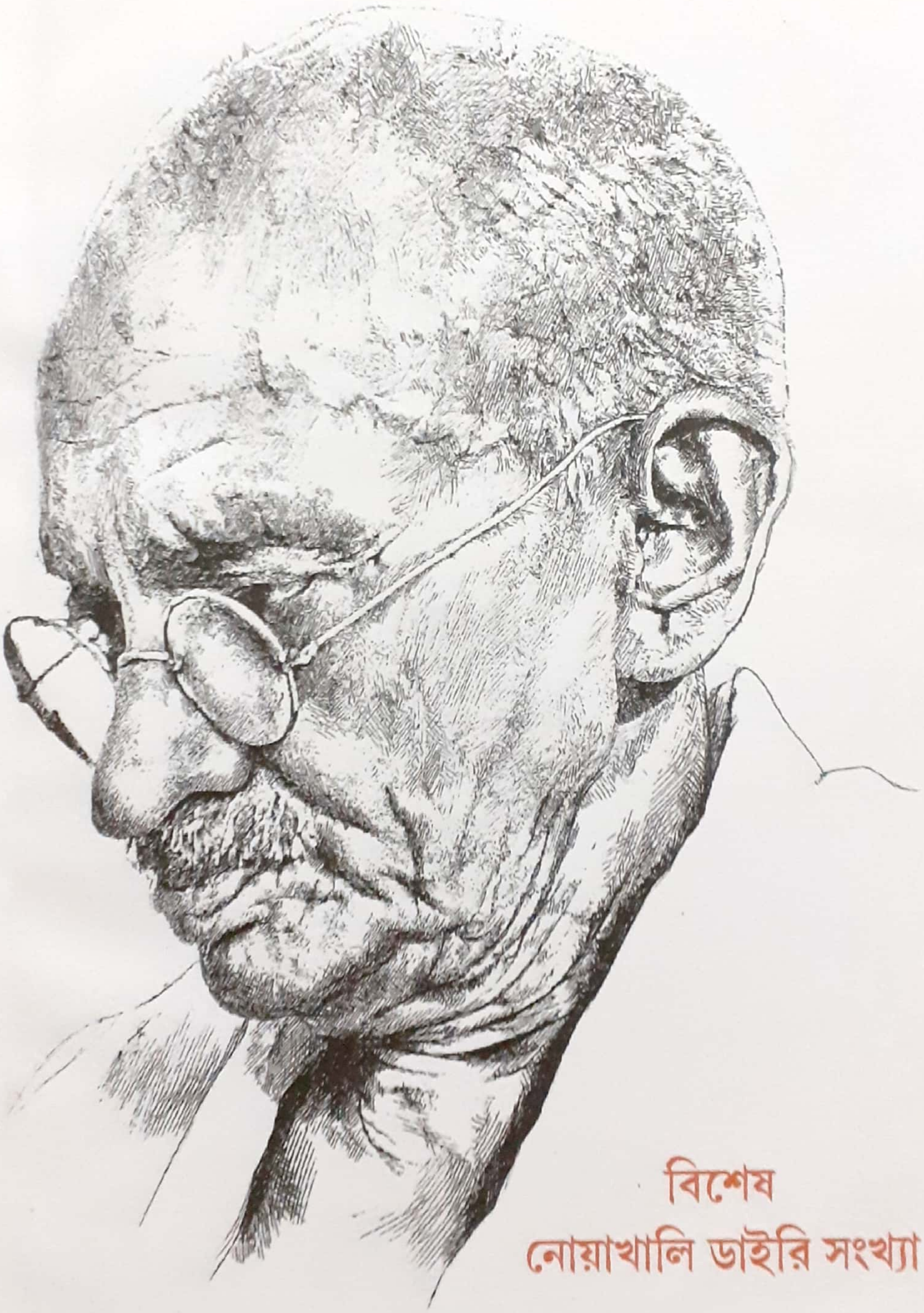

বিশেষ

নোয়াখালি ডাইরি সংখ্যা

Scanned by CamScanner

সূচি/Content

নোয়াখালি ডাইরি ৯
মোহনদাস করমচাঁদ গান্ধী

বিবিধ প্রবন্ধ ১১৭
ভারতীয় নাটকে হরিশচন্দ্র মিথ
বিপ্লব চক্রবর্তী

নাটক নুরি: অস্থির সময়ের উদ্ভাসন ১২৩
আলাউদ্দিন মণ্ডল

বাংলার মকর সংস্কৃতি ১৩৪
দীপঙ্কর পাড়ুই

অন্তর্গত রক্তের ভিতর খেলা করে... ১৫০
সৌরেন বন্দ্যোপাধ্যায়

ইতিহাসের ক্লাস ১৫৩
অত্রি ভট্টাচার্য্য

Economics at the service of Neo-Liberalism ১৬০
Vibha Iyer

Polysystem Theory and Disability-centric texts:
Case Study of the Odia short story ১৭১
Lakshyaheera
Madhumita Chanda

न पूरब से अभिभूत न पश्चिम से आक्रांत: आचार्य रामचंद्र शुक्ल १८१
शीतांशु

प्रतिकूल हवाओं में जलती मशाल: राजेंद्र बाला घोष 'बंग महिला' २११
अंजूलता

पाणिनीयधातूनां नानार्थविचारविमर्शः २१७
तरुण-चौधुरी

Scanned by CamScanner

प्रतिकूल हवाओं में जलती मशाल: राजेंद्र बाला घोष 'बंग महिला'

अंजूलता
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम

प्रारंभिक हिंदी कहानियों में बंग महिला का नाम एक महत्वपूर्ण कहानीकार के रूप में लिया जाता है। बंग महिला की कहानियों में मध्यवर्गीय संवेदना का स्पष्ट विकास दिखाई देता है। एक ऐसे समय में जब कहानीकार कल्पना तत्व के सहारे अपनी कला को विकसित करने का प्रयास कर रहे थे, बंग महिला की कहानियाँ मध्यवर्गीय संवेदना के यथार्थ से गहरा सरोकार रखते दिखाई देती हैं। इनकी कहानियों और लेखों से इस बात का स्पष्ट बोध होता है कि नवजागरण के युग में आम भारतीयों के लिए कौन से प्रश्न महत्वपूर्ण थे। पाठकों को यह भी पता चलता है कि आधुनिकता के विकास के युग से भारतीय समाज और स्त्रियों की प्रगति के लिए हम किन पहलुओं की तलाश कर सकते हैं। इस दौर में, जहाँ एक तरफ हम आधुनिकता का हवाला देकर जीवन के विविध आयामों को नए सिरे से खंगाल रहे थे वहीं दूसरी ओर हम भारतीय समाज की विसंगतियों को भली भांति समझ भी ना सके थे। भारतीय साहित्य और समाज में आधुनिकता के अलग-अलग मायने विकसित हो रहे थे। भारत के अलग-अलग भौगोलिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में इसके विचारों का स्वरूप अलग-अलग ढंग का था। इसने तरह-तरह की दुविधाओं का विकास किया था। ऐसे परिवेश में ही बंग महिला सृजनरत थीं, जो जन्म से तो बंगाली थीं लेकिन उनका कर्म-क्षेत्र था हिन्दी प्रदेश और हिन्दी साहित्य।

बंग महिला की पहली कृति 'चंद्रदेव से मेरी बातें' आख्यायिका के रूप में सन् 1904 में प्रकाशित हुई। इस कृति में लेखिका चंद्रदेव को संबोधित करते हुए साम्राज्यवादी शक्तियों का स्पष्ट विरोध करते हुए लिखती हैं कि 'देवता भी अपनी जाति के कैसे पक्षपाती होते हैं। देखो न चंद्रदेव को अमृत देकर उन्होंने अमर कर दिया- तब यदि मनुष्य होकर हमारे अंग्रेज अपने जातिवालों का पक्षपात करें तो आश्चर्य ही क्या है? अच्छा यदि आपको अंग्रेज जाति की सेवा करना स्वीकार हो

Scanned by CamScanner

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

विद्यावार्ता®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Issue-30, Vol-04 April to June 2019

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Scanned by CamScanner

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

April To June 2019
Issue-30, Vol-03

Date of Publication
01 May 2019

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned by CamScanner

Index

01) The impact of climate change on Business Strategies
Nisha Agrawal, Bhopal MP ||10

02) Menstruation a Social and Traditional Taboo
Dr. Gagan Kumar , Smt. Priyanka Bharti, Sitapur ||12

03) RESERVATION FOR HIGHER CASTES COMMUNITIES IN INDIA ....
Jatavath Hanumu ,Hyderabad ||16

04) Flow of credit to agriculture in India
Prof. Dr. T. P. More,Buldana (MS) ||19

05) ENVIRONMENT AND HEALTH ISSUES OF MARBLE MINING .....
DR. Anju Ojha,DR. M. M.Sheikh, Churu ||23

06) The role of computers in mathematics learning
Anil Kumar Jain , Jaipur ||31

07) Sustainability of Economy and Money laundering
Prof. Dilpreet Kaur,LUDHIANA. ||36

08) Rosie-The Eternal Heroine in R.K. Narayans, The Guide
Asst. Prof.Shikha, Hariana ||43

09) A STATUS OF RURALWOMEN ENTREPRENEURSHIP IN INDIA ....
P. Thangaraj,Dr. P. Loganathan,Namkkaal (Dt) ||45

10) Economic Ideas of Mahadev Govind Ranade
Dr. Manjula Upadhyay, Lucknow ||49

11) An over View of Human Right in the Context of History
Vijay Shankar,Sri.Muktsar Sahib. ||55

12) Macrophytes Biodiversity of Sikam Reservoir from Rajura.....
S.A. Dhoble, Y.B. Gedam & M.B.Wadekar, Chandrapur ||58

13) Problems of Indian Agriculture Marketing
Prof. Dr. Sangram R. Raghuwanshi, Amravati ||61

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned by CamScanner

14) ORIGIN OF THE POLICE
Dr. G. Sanjeevayya, Andhra Pradesh ||64

15) डोपिंग विरोधी चळवळ गतीमान करणे काळाची गरज
डॉ.घायाळ बाबुराव लक्ष्मणराव,नांदेड ||68

16) कविता गजाआडच्या : स्त्री जाणिवांचा अविष्कार
प्रा.डॉ. सूर्यकांत हरिश्चंद्र गित्ते,बुलडाणा. ||70

17) डोपिंगमुळे खेळाडूंवर होणारे परिणाम आणि उपाययोजना
डॉ.जाधव धरमसिंग गेमसिंग,नांदेड ||74

18) स्त्री दु:खाचा उत्कट उद्‌गार म्हणजे 'वेदन'
प्रा. सौ. संगीता नारायणराव मुंढे, हिंगोली. ||76

19) पश्चिम महाराष्ट्र आणि मराठवाडा विभागातील आंतरविवाह ......
डॉ.संजय ज्ञानोबा सावंत,कोल्हापूर ||78

20) एकोणिसावे शतक आणि महाराष्ट्रातील दलित चळवळ : एक आकलन
डॉ.एस.डी. सावंत,लातूर ||81

21) संत कवयित्रींच्या अभंगाची सामाजिक उपयुक्तता
डॉ.प्रतिभा सुधीर पेंडके, कु.अर्चना शंकरराव कोहळे ||87

22) भारतातील उच्च शिक्षण स्वरूप : विवेचन — एक अभ्यास
प्रा.डॉ.उन्मेश शेकडे, लातूर ||90

23) विद्यार्थी केंद्रीत महाराष्ट सार्वजनिक विद्यापीठ कायदा — २०१६
श्री.संतोष रंगराव शहापूरकर, कोल्हापूर ||94

24) वडगाव लढाईतील भिवराव पानसे यांची कामगिरी (१७७९)
प्रा.डॉ.भानुसे कारभारी लक्ष्मण,औरंगाबाद ||97

25) अमर्त्य सेन यांचे अर्थिक विचार
प्रा.डॉ.राजेंद्र निंबा बोरसे, लोणार ||99

26) सोळाव्या लोकसभा निवडणूकीतील माध्यमांची सक्रियता व गतीशीलता आणि ...
गजानन सहादेव उपरीकर, नागपूर. ||101

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned by CamScanner

27) शरतचंद्र चट्टोपाध्याय कृत देहाती समाज में किसान जीवन || 105
अंजु लता,असम

28) भारतीय समाज में नारी अस्मिता ||110
अजीत कुमार दीक्षित, मुरादाबाद

29) विलास गुप्ते के साहित्य में राजनीतिक क्षेत्र में मूल्य विघटन की समस्या ||114
गुंजाळ बाळासाहेब पढरीनाथ,रत्नागिरी.

30) क्रीडा क्षेत्र में खिलाडी एवंम् प्रतिबन्धीत द्रव्ये (औषधी) ||118
प्रा.डॉ. जुझारसिंघ निर्मलसिंघ सिलेदारा, नांदेड

31) वैदिक साहित्य में उल्लिखित संस्कारों का विश्लेषण ||119
डॉ०उमा सिंह, लखनऊ

32) प्राचीन भारतीय स्रोत में महिला शिक्षा के संदर्भ ||125
डॉ.शैलेन्द्र तिवारी, वाराणसी

33) उषा प्रियम्वदा का उपन्यास नदी भाषा – शिल्प के संदर्भ में ||131
सुनीता देवी, चंडीगढ़

34) तीर्थराज प्रयाग की महत्ता ||133
डॉ० राजेश कुमार यादव, बाराबंकी, उ०प्र०

35) राष्ट्रीय साँस्कृतिक काव्यकार माखनलाल चतुर्वेदी....... ||135
डॉ.सपना बंसल, Summer Hill Shimla.

36) नक्सलवाद : एक समाजशास्त्रीय विवेचन ||141
डॉ. गीता सामौर, जयपुर (राज.)

37) महिला समस्या एवं मानवाधिकार की आवश्यकता ||145
राजेन्द्र सिसोदिया,इन्दौर, (म.प्र.)

38) साहित्य, समाज और मीडिया के अन्तर्सम्बन्धों में बदलाव ||147
डॉ. गोपीराम शर्मा,श्रीगंगानगर (राज.)

39) ब्रज संस्कृति में संगीत का महत्व ||151
डॉ०वन्दना अग्रवाल, मेरठ

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned by CamScanner

27

शरतचंद्र चट्टोपाध्याय कृत देहाती समाज में किसान जीवन

अंजु लता
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम

****

भारत को आजादी के मिलने के लगभग सौ वर्ष पहले से ही समाज में परिवर्तन की ध्वनि परिलक्षित होने लगी थी। इन परिवर्तनों का साहित्य, संस्कृति, कला, राजनीति आदि पर गहरा प्रभाव दिखाई देता है। धीरे–धीरे इन्हीं परिवर्तनों की कोख से साम्राज्यवादी शक्ति से लड़ने का जो सामाजिक और राजनैतिक वातावरण तैयार होता है उसमें साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण दिखाई देती है। बीसवीं सदी के साहित्यकारों में गहरी सामाजिक संवेदनशीलता उभरकर सामने आती है। ये रचनाकार सामाजिक अन्याय और भेदभाव के विरूद्ध लगातार अपने साहित्य के माध्यम से संघर्ष करते हैं। इस संघर्ष के क्रम में रचनाकार सामाजिक विसंगतियों को बहस के केंद्र में लेकर आता है। इस समय का साहित्य केवल मनोरंजन का कार्य नहीं करता है बल्कि अपनी सामाजिक और वर्गीय पक्षधरता को भी निर्धारित करता है। वह समाज के उस वर्ग के यथार्थ को सामने लेकर आता है जिसकी मूलभूत आवश्यकताएं पूरी नहीं हो पाती हैं। जिसके सामने तमाम धार्मिक और सामाजिक प्रतिबंध है और एक खास वर्ग और जाति के होने के कारण उनको भेदभाव का शिकार होना पड़ता है।

हर समय के समाज की अपनी कुछ जरूरतें होती ही और साहित्यकार की जिम्मेदारी होती है कि वह अपने साहित्य के माध्यम से उन जरूरतों को पूरा करे। वह परंपरा का मूल्यांकन करता है और इस क्रम में वह परंपरा को अपनी विचारधारा के अनुसार रिवाइब करता है। समय की आवश्यकता के अनुसार तथ्यों को जोड़ता और निकालता है। जब शरतचंद्र ने लिखना आरंभ किया तो उस समय उनके सामने बांग्ला साहित्य की एक लंबी और समृद्धशाली परंपरा मौजूद थी। अधिकांश साहित्य नवजागरण के प्रकाश में रचा जा रहा था जिसका प्रभाव संपूर्ण भारतीय साहित्य पर पड़ता दिखाई देता है। नवजागरणकालीन साहित्य में विधवा विवाह, जात–पात का विरोध, धार्मिक कट्टरता की भावना का विरोध, बाल विवाह का विरोध साफ दिखाई देता है। शरतचंद्र के लेखन को इसी परंपरा के आलोक में देखने की जरूरत है।

शरतचंद्र का उपन्यास पल्ली समाज मुख्य रूप से जमींदारों की कथा को केंद्र में रखकर लिखा गया है। इस उपन्यास में एक तरह का आत्मसंघर्ष दिखाई देता है— रचनाकार का स्वयं से और समाज से। शरतचंद्र जमींदारों के दोहरे चरित्र को उभार कर सामने लाते हैं। पूरे उपन्यास में उनकी प्रतिबद्धता समाज के शोषित पीड़ित वर्ग के प्रति लगातार परिलक्षित होती है। शरतचंद्र स्वयं जमींदार परिवार से थे लेकिन समाज के शोषित और पीड़ित वर्ग के प्रति उनकी आत्मीयता और संवेदनशीलता के कारण ही वे इस तरह की रचना कर पाते हैं।

शरतचंद्र के साहित्य का अनुवाद लगभग सभी भारतीय भाषाओं में किया गया है। यह अकेले ऐसे कथाकार हैं जिनके अधिकांश साहित्य पर फिल्में बन चुकी हैं। अपने साहित्य में शरतचंद्र ने समाज के सामंती मानदंडों को लगातार ध्वस्त करने का कार्य किया है। धर्म के पाखंड तथा जाति और वंश को मानने वाले समाज की सीमाओं को रेखांकित किया है। वह सारे नियम कानून जिन्हें समाज सहज ही ग्रहण करता है और इस क्रम में एक खास वर्ग को मनुष्य की श्रेणी में नही गिनता, उस समाज की विसंगतियों को इनके साहित्य में बेहतरीन ढंग से दर्शाया गया है। पल्ली समाज इसी तरह की संवेदना को व्यक्त करने वाला उपन्यास है। चूंकि उपन्यास का स्वरूप ऐसा होता है कि उसमें लेखक का जीवन दर्शन व्यक्त होता है, उसका दायरा बहुत बड़ा होता है, एकसाथ वह कई

Scanned by CamScanner

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

अंक 285 वर्ष 58

भाषा

जुलाई–अगस्त 2019

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय
भारत सरकार

Skill India

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

निदेशक की कलम से
आपने लिखा
संपादकीय

आलेख

1. नवगीत के सर्जनात्मक आयाम	डॉ. अनिल कुमार	9
2. 21वीं सदी का हिंदी उपन्यास लेखन और महानगरीय बोध	डॉ. संदीप रणभिरकर	18
3. भारतीय लोकगीतों का नया अवतार : चटनी संगीत	डॉ. चंद्रकांता किनरा	24
4. गिरिजाकुमार माथुर : चिंतन की एक स्वस्थ परंपरा	सुरेश धींगड़ा	28
5. हिंदी के काव्य विकास में जुड़ा हाइकु–एक नया आयाम	डॉ. इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ	33
6. राष्ट्रीय आंदोलन और हिंदी पत्रकारिता	डॉ. एम. शेषन्	36
7. प्रगतिवाद : छायावाद विरोधी तेवर	आचार्य डॉ. केशवराम शर्मा	41
8. आधी आबादी और अरुण कमल की कविता	सुश्री प्रीति प्रकाश डॉ. अनुशब्द	45

धरोहर

9. रश्मिरथी (प्रथम सर्ग)	रामधारी सिंह 'दिनकर'	50

कहानी

10. एक राजनैतिक कहानी (तेलुगु कहानी)	एम. वेंकटेश्वर	54
11. पांडे सदन (हिंदी कहानी)	इंदिरा दाँगी	61
12. सर्जा – राजा (हिंदी कहानी)	कृष्णा कदम	72

कविता

13. स्वतंत्रता दिवस: एक अभिव्यक्ति (नेपाली/हिंदी)	मूल एवं अनुवाद : इंद्र बहादुर गुरूङ	76
14. नवकलेवर (ओड़िआ/हिंदी)	मूल : वासुदेव सुनानी अनुवाद : अजय कुमार पटनायक	78
15. हिम्मत (संथाली/हिंदी)	मूल एवं अनुवाद : किरण कुमारी हाँसदाक	82

Scanned with CamScanner

आधी आबादी और अरुण कमल की कविता

सुश्री प्रीति प्रकाश
डॉ. अनुशब्द

मैंने उसे इतना डांटा
गालियाँ दीं
दो तीन बार पीटा भी
फिर भी चुपचाप सारा काम करती गई.......
वह कभी बोली क्यों नहीं
एक बार भी बोलती...............

समकालीन हिंदी कविता में अरुण कमल का महत्वपूर्ण हस्तक्षेप है। रचना और आलोचना दोनों ही क्षेत्रों में उनकी गहरी पैठ है। एक से बढ़कर एक उनके कुल पाँच कविता संग्रह हैं- 'सबूत', 'नए इलाके में', 'पुतली में संसार', 'अपनी केवल धार' और 'मैं वो शंख महाशंख'। इनके काव्य संग्रहों का पाट बहुत चौड़ा है और संवेदना की गहराई तो उनमें है ही। 'गोलमेज' और 'कविता और समय' उनकी आलोचनात्मक प्रतिभा के प्रतिमान हैं। जिनमें समय-समय पर उनके लिखे आलेखों का संकलन है। उनकी कविताओं का स्वर समाज और राजनीति के कई पहलुओं को बड़ी संजीदगी के साथ छूता है। राजनीति का राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय संदर्भ हो या समाज का पिछड़ा वर्ग हो सब उनकी कविताओं में स्थानीय विशेषताओं के साथ उपस्थित है। उनकी कविताओं में स्त्री पात्र समाजानुकूल अपनी उपस्थिति दर्ज करवाती है।

उपर्युक्त कविता 'एक बार भी बोलती' वह यक्ष प्रश्न खड़ा करती है जिसके उत्तर की प्रतीक्षा शायद आज भी हर स्त्री को है। आखिर वह कौन सा सामाजिक ढांचा है जो महिलाओं को इतना कमजोर, इतना बेबस बना देता है कि वे मजबूर हो जाती है तमाम रंजो सितम के साथ जिंदगी गुजर-बसर करने के लिए। कई बार तो वे अपनी इस मजबूरी को अपनी नियति मान लेती हैं। अरुण कमल हिंदी कविता में शोषितों और पीड़ितों के प्रतिनिधि के रूप में जाने जाते हैं। उनकी कविता में समाज के वंचित वर्ग को वाणी मिलती है। "जिसका कोई प्रतिनिधि नहीं होता है उसका प्रतिनिधि कवि होता है" इस वाक्य से कवि न सिर्फ इत्तेफाक रखते हैं बल्कि इसे अपने लेखन में पूरी तरह आत्मसात करते हैं। यदि उनकी कविताओं में स्त्री जीवन की झलक देखने का प्रयास करें तो वहाँ भी पढ़ी लिखी और समाज के संभ्रात वर्ग से आने वाली महिलाएँ कम मिलती हैं। अरुण कमल की कविताओं में तो ग्राम वधुएँ हैं, रोजी-रोटी की जुगाड़ में लगी निम्नवर्गीय महिला है, घर-घर जाकर काम करने वाली कुबड़ी काकी है और जिजीविषा के साथ रोजमर्रा की जिंदगी से संघर्ष कर रही औरतें हैं। अरुण कमल इन महिलाओं की समस्याओं को अपनी लेखनी से आवाज देते हैं।

प्रसिद्ध वैद्यक चरक ने लिखा था कि समस्या जहाँ उत्पन्न होती है उसका निदान भी वहीं होता है। इसलिए चरक की बात मानते हुए चूँकि महिलाओं की चुप्पी का प्रश्न अरुण कमल की कविता से सामने आया है इसलिए जवाब भी अरुण कमल की कविताओं

[illegible] ISSN 0523-1418
CS Scanned with CamScanner

UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR), Impact Factor 2.314 **ISSN : 2393-8358**

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 6, No. 5.1 **Year-6** **May, 2019**

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor

Dr. Indranil Sanyal

Joint Editors

Dr. Shrabanti Maity **Dr. Avijit Debnath**

PUBLISHED BY

S. K.C. School of English and Foreign Languages

Assam

Mob. 9415388337, Email : ijcrjournal971@gmail.com, Website : ijcrjournal.com

CONTENTS

➥	Opportunities and Problems of Handicrafts Sector in Indian Economy **Neha Gupta & Mansoor Ali**	1-4
➥	The Feminism Reconsidered: A Study of Anita Desai's Novel Cry, The Peacock **Rajesh Kumar**	5-10
➥	भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में फतेहपुर जनपद के गरम दल के युवकों का योगदान **अशोक कुमार**	11-14
➥	जल संसाधन का उचित उपयोग **डॉ0 शिव प्रकाश सिंह**	15-18
➥	लेनिन और मार्क्स एन्जेल्स की भूमिका : राजनीतिक प्रणाली **डॉ0 नवीन पाण्डेय**	19-23
➥	मुक्तिबोध के काव्य में शोषित और पीड़ित वर्ग मार्क्सवाद के विशेष आलोक में **प्रेम चन्द**	24-26
➥	महिलाओं के सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका **विवेक सिंह**	27-32
➥	पर्यावरण एवं बाल–विकास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन **प्रभात किरण**	33-36
➥	Indo- Sri Lanka Agreement 1987 **Dr. H.L. Sharma**	37-39
➥	सारनाथ के बौद्ध मन्दिरों का सांस्कृतिक अध्ययन **डॉ0 अभय कुमार एवं देवेन्द्र कुमार**	40-42
➥	बौद्ध साहित्य में वर्णित सामाजिक आदर्श के मूल तत्व **डॉ0 कलावती**	43-44
➥	ममता कालिया की कहानियों और स्त्री चेतना **डॉ0 पुष्पलता कुमारी**	45-47
➥	पूर्व मध्यकाल में भारत और अरब के बीच व्यापारिक गतिविधियाँ **नीलेश झा**	48-50
➥	Professionalism and Ethics in Teaching **Prashant Kumar Singh**	51-54
➥	Gandhi's *Swaraj*: A New Notion of Self, State and Sovereignty **Sanjay Kumar & Archana Kumar**	55-63
➥	Tradition of Yarn Preparation in Medieval India **Dr. Anand Kumar Singh**	64-68

➥	संस्कृत बाल साहित्य से इतर बाल साहित्य **डॉ0 अमर जीत**	69-72
➥	स्वतंत्रता पूर्व प्रमुख समाचार पत्रों की रूपरेखा **डॉ0 रजनीश उपाध्याय**	73-76
➥	जल संकट : संरक्षण व समाधान **डॉ0 अमिता श्रीवास्तव**	77-78
➥	समकालीन हिन्दी कविता और कुँवर नारायण **डॉ0 विदुषी आमेटा एवं मंजु ढुल**	79-82
➥	स्ववित्तपोषित शिक्षक–शिक्षण संस्थानों का महत्व और सामुदायिक विकास **डॉ0 संजय कुमार राना**	83-86
➥	Marital Rape in India: Problem or Culture **Dr. Neha Chaudhary**	87-92
➥	Foreign Investment in India Since 1991 **Dr. Ravindra Kumar Sharma**	93-98
➥	डॉ0 शिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य में समकालीनता **अशोक कुमार सिंह एवं डॉ0 ललित कुमार सिंह**	99-102
➥	सुरेंद्र वर्मा के नाटक "आठवां सर्ग" का वैचारिक विश्लेषण **शैलेश कुमार राय**	103-104
➥	निज़ामाबाद के काले मृण्मय पात्रों पर अंलकरण एवं सांस्कृतिक चेतना **डॉ0 ब्रह्म स्वरूप**	105-107
➥	महाराष्ट्र में अभंग **डॉ0 अपूर्व रंगप्पा**	108-110
➥	सुभाष चन्द्र बोस : दलीय कार्यक्रम और फारवर्ड ब्लाक एवं आजाद हिन्द फौज **डॉ0 जया**	111-115
➥	Communal Harmony and Equity: The Gandhian Way **Dr. Ziyauddin & Dr. Rajeev Kumar Singh**	116-122
➥	Concept of Sustainable Development and Smart Cities **Dr. Kailash Nath Singh**	123-128
➥	मराठी और नेपाली साहित्य में रामभक्ति **अमित थापा**	129-132
➥	भारतीय राजनीति में सुशासन की अवधारणा और उभरती हुई नवीन चुनौतियां **कमलेश कुमार**	133-136
➥	भारत–पाक संबंधों पर आधारित समकालीन हिंदी फिल्में **उन्मेषा कोंवर/डॉ0 अनुशब्द**	137-140

UGC Approved Journal No. 48416 Impact Factor : 2.314
Interdisciplinary Journal of Contemporary Research, Vol. 6, No. 5.1, May, 2019 ISSN : 2393-8358

भारत-पाक संबंधों पर आधारित समकालीन हिंदी फिल्में

उन्मेषा कोंवर / डॉ. अनुशब्द
हिंदी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, असम

सन 1947 में दो अलग-अलग राष्ट्रों के रूप में भारत और पाकिस्तान को ब्रिटिश शासन से आजादी मिली। भारत उपमहाद्वीप में सदियों से मिलजुलकर रह रहे दो प्रमुख संप्रदायों को आधार बनाकर विभाजन की नींव डाली गयी। भारत और पाकिस्तान दोनों ही मुल्कों पर विभाजन के अनेक दुष्प्रभाव पड़े। दोनों देश शरणार्थी समस्या से लेकर सीमा विवाद तक अनेक छोटी-बड़ी समस्याओं से जूझ रहे थे। दोनों देशों के जनता के बीच भावनात्मक स्तर पर एक गहरी खाई खोद दी गयी थी, जो बढ़ते समय के साथ-साथ और भी गहरा होता गया। भारत-पाक विभाजन का सिद्धांत एक तत्कालीन सिद्धांत था। सु-परिकल्पित न होने के कारण इसका असर राजनीति, समाज सभी पर पड़ा। भारत-पाक विभाजन के बाद दोनों देशों में मैत्री लाने के उद्देश्य से काफी आलोचनाएँ की गयी। वर्तमान समय में भी भारत और पाकिस्तान के बीच मैत्री स्थापित करने की अनेक कोशिश जारी है।

सिनेमा समाज का एक ऐसा अंग है जिसे जनजीवन से अलग नहीं किया जा सकता। समाज के अलग-अलग दृश्यबिंब, जाति के रंग रूप सिनेमा के सहारे उभरकर सामने आता है। सिनेमा की विकास यात्रा रंगमंच से, साहित्य से, लोकगीतों तथा लोकपरंपराओं से होते हुए आधुनिक समय में विज्ञान के शिखर तक फैली हुई है। साहित्य में यथार्थवाद जिस प्रकार एक नया विषय नहीं है उसी तरह सिनेमा भी यथार्थ का ही मूर्त रूप है। व्यावसायिक उद्देश्य से कल्पना का रंग लगाने पर भी सिनेमा यथार्थ के अति निकट होता है। भारतवर्ष के इतिहास की सबसे त्रासद घटना भारत-पाक विभाजन को भी हिंदी सिनेमा ने अपना उपजीव्य बनाया है। विभाजन की त्रासदियों का गहन और संवेदनात्मक चित्रण इन फिल्मों में किया गया है।

विभाजन पर आधारित फिल्मों में पहला नाम सन 1993 में निर्मित फिल्म 'सरदार' का लिया जा सकता है। यह एक जीवनीमूलक फिल्म है। फिल्म में भारत-पाकिस्तान के विभाजन से पूर्व और बाद की परिस्थितियों का चित्रण किया गया है। भारत विभाजन के पश्चात देशी रियासतों को भारत में शामिल करने और कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक जोड़कर आजाद भारत के निर्माण करने में वल्लभभाई पटेल के योगदान की कहानी ही फिल्म की कहानी है। फिल्म में सत्याग्रह आंदोलन, शरणार्थी समस्या, विभाजन के दौरान की गयी आलोचनाओं, अनशन, गांधी हत्या, आदि को भी स्थान दिया गया है।

सन् 1994 में निर्मित फिल्म 'मम्मो' में भारत-पाक विभाजन की त्रासदी को संवेदनात्मक रूप में चित्रित किया गया है। फिल्म की कहानी एक ऐसी स्त्री पर केंद्रित है, जो भारत विभाजन के समय पाकिस्तान चली गयी थी। उसका नाम था 'मम्मो'। पाकिस्तान में पति के मृत्युपरांत मम्मो बिल्कुल अकेली पर जाती है। वह भारत में अपने सगे-संबंधियों के पास आना चाहती है, लेकिन कानून इसमें बाधा बन जाती है। मम्मो को अब अपने ही जन्मस्थान में आकर रहने की इजाजत नहीं मिल पाती। फिल्म के अंत में अपने आपको सरकारी रूप में मृत घोषित कर वह भारत में अपनी बहन के साथ रह जाती है। 'मम्मो' फिल्म में आर्थिक तंगी से जूझते मध्यवर्ग की रोज़मर्रा के छोटे-छोटे प्रसंगों को संजीदगी के साथ दिखाया गया है। साथ में इस बात को उजागर किया गया है कि किस तरह सरकारी व राजनीतिक शर्तें मानवीयता को परास्त कर देती हैं। मम्मो का जीवन देश विभाजन के कारण दुखद बन जाता है।

सन 1998 में खुशवंत सिंह द्वारा लिखित उपन्यास 'ट्रेन टू पाकिस्तान' पर इसी नाम फिल्म का निर्माण किया गया। इस फिल्म में इस बात को उजागर किया गया है कि परिस्थितियाँ किस तरह से मनुष्य को ही एक दूसरे के खिलाफ कर देती है। लेकिन मनुष्य की संवेदनशीलता और धैर्य बुराई का नाश करने में सक्षम है। फिल्म की कहानी के अनुसार मनु माज़रा गाँव के लोगों में विभाजन के उपरांत भी मेल मिलाप पूर्ववत कायम था। लेकिन कुछ आतंकी आकर उन्हें संप्रदाय के नाम पर हिंसा के लिए उकसाते हैं। इस सबके

बावजूद मनु माज़रा के लोग धीरज से काम लेते हैं और मुस्लिमों को वहाँ से पाकिस्तान जाने में मदद भी करते हैं। सन् 1998 में निर्मित '1947: Earth' की कहानी बापसी सिधवास द्वारा लिखित उपन्यास 'Cracking India' पर आधारित है। फिल्म की पटभूमि है लाहौर प्रदेश, जो भारत विभाजन के उपरांत पाकिस्तानी पंजाब की राजधानी घोषित हुआ। इस फिल्म में भारत विभाजन के पहले और विभाजन के दौरान की कहानी को रेखांकित किया गया है। विभाजन की त्रासदी का वर्णन ही इस फिल्म का मुख्य उद्देश्य है। साथ ही स्वतंत्रता के बाद जनता के मोहभंग की स्थिति का सजीव चित्रण भी फिल्म का मुख्य आकर्षण है। इस फिल्म में कुछ ऐसे चरित्रों को दिखाया गया है जो स्वतंत्रता के बाद अपने धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य हो जाते हैं ताकि उन्हें अपनी जन्मभूमि का त्याग नहीं करना पड़े। असल में यह भी भारत विभाजन की भीषण त्रासदियों में से एक है।

सन् 2001 में बनी फिल्म 'गदर: एक प्रेम कथा' भारत विभाजन की त्रासदी पर आधारित फिल्म है। इस फिल्म की कहानी प्रेम प्रसंग पर आधारित है। इस फिल्म का उद्देश्य भारत-पाक विभाजन के उपरांत आनेवाली नफरत व हिंसा की भावना को शीतलता प्रदान करना था। साधारण से सिक्ख ड्राइवर और उच्च वर्ग के मुसलमान लड़की के बीच के प्रेम संबंध को इस फिल्म में देश और काल से परे दिखाया गया है। सन् 2003 में अमृता प्रीतम के उपन्यास 'पिंजर' पर उसी नाम से एक फिल्म का निर्माण किया गया। इस फिल्म में दो ऐसी स्त्रियों की कहानी वर्णित है जिनके ज़िंदगियों में भारत-पाक विभाजन ने उथल-पुथल मचा दिया। पिंजर की नायिका अपने अतीत को भुलाकर घर-परिवार का त्याग कर पाकिस्तान चली जाती है जहाँ उसका पति मुसलमान होते हुए भी उसका साथ निभाता है। दूसरी ओर उसके भाभी को भी एक मुसलमान उठाकर ले जाता है, जिसका वह उद्धार करती है। फिल्म में स्त्री पात्रों को मुख्य भूमिका में रखकर स्त्रियों की समस्या व उनके दृष्टिकोण से विभाजन को रेखांकित करने की कोशिश की गयी है।

भारत और पाकिस्तान के बीच हुए युद्ध और घुसपैठी हमलों पर भी फिल्में बनीं। 'रिफ़्यूजी' (2000), 'एल.ओ.सी करगिल' (2003), 'लक्ष्य' (2004), 'अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों' (2004), 'क्या दिल्ली क्या लाहौर'(2014) आदि। जे.पी. दत्ता के निर्देशन में बनायीं गयीं फिल्म 'एल-ओ-सी कारगिल' में भारतीय सिपाही को पाकिस्तानी घुसपैठियों को करारा जवाब देते हुए नजर आते हैं। इसके अलावा बाकी फिल्मों की कहानियाँ प्रेम प्रसंग के इर्द-गिर्द घूमती है। 'लक्ष्य' और 'अब तुम्हारे वतन साथियों फिल्मों' में दो ऐसे युवाओं की कहानी वर्णित है जो अपने आपको प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से भारतीय सेना में भर्ती होते हैं किन्तु अंत तक उनमें देशभक्ति जागृत हो ही जाती है। सन् 2014 में निर्मित 'क्या दिल्ली क्या लाहौर' फिल्म की पटभूमि है सन् 1948 में भारत-पाक विभाजन के तुरंत बाद भारत-पाक सरहद पर हुई गोलाबारी की परिस्थिति। कहानी में चित्रित पाकिस्तानी सैनिक विभाजन के समय भारत से पाकिस्तान गया था जबकि भारतीय सैनिक पाकिस्तान से भारत आया था। यद्यपि अपने अपने कर्म के प्रति दोनों ही सिपाही पूर्णतः समर्पित है उनके अधिकारी उनपर विश्वास नहीं रखते। इस फिल्म में मानवीय अनुभूति को सर्वोपरि दिखाया गया है। कभी-कभी मनुष्य बाध्य होकर जीवन और जीविका के लिए अनचाहे काम तो करता है लेकिन अंत में मानवीयता और मूल्यबोध ही श्रेष्ठ साबित होते हैं। इस फिल्म में विभाजन की त्रासदी को दोनों सिपाहियों के जीवन से जोड़कर मर्मस्पर्शी रूप में प्रस्तुत करने में निर्देशक सफल हुआ है। 'रिफ़्यूजी' फिल्म में भारत और पाकिस्तान के बीच चल रहे अवैध प्रवजन को दिखाया गया है।

सन् 2004 में बनी फिल्म 'वीर-ज़ारा' भारत-पाक संबंध पर बनी एक उल्लेखनीय फिल्म है। इस फिल्म में एक प्रेम कहानी के माध्यम से दोनों देशों के बीच जो संदेह और शत्रुता की भावना है उसे रेखांकित किया गया है। जहाँ नायक को केवल संदेह के आधार पर पूरा जीवन पाकिस्तान में गुज़ारना पड़ता है। फिल्म में बंधुत्व और भ्रातृत्व की भावना को प्रबल व प्रभावी ढंग से दिखाया गया है। नायिका पाकिस्तानी होते हुए भी यह सोचकर सारा जीवन भारत में बिताती है कि नायक की मृत्यु हो गयी है। इस फिल्म में अनेक छोटी-छोटी घटनाओं के माध्यम से यह दर्शाने की कोशिश की गयी है कि भारत और पाकिस्तान के लोग गलतफहमियों के शिकार हैं। सभी राजनीतिक या सांप्रदायिक भावनाओं से ऊपर है मानवताबोध की भावना। इसी मानवताबोध के चलते पाकिस्तानी वकील जी-तोड़ मेहनत कर नायक को वापस भारत भेजने में सक्षम

होती है। कुछ इसी तरह की कहानी को अलग ढांचे में सन् 2017 की फिल्म 'टाइगर जिंदा है' में दिखाया गया है। फिल्म में इंडियन रॉ एजेंट और पाकिस्तानी आई एस आई एजेंट के बीच संबंध को लेकर इस मनस्तत्व को उजागर करने की कोशिश की गयी है दोनों देशों की दुश्मनी आपसी गलतफहमी है और कुछ नहीं। सन् 2015 में बनी 'हम तुम दुश्मन दुश्मन' फिल्म का भी यही मूलभाव रहा, जहाँ एक कश्मीरी बच्चे को बचाने के लिए एक पाकिस्तानी और एक भारतीय सिपाही अपने सभी द्वंदों को भूलकर आगे बढ़ता है।

भारत और पाकिस्तान के बीच ऐसे मामलों की कमी नहीं है जहाँ घुसपैठिये समझकर बेकसूर लोगों को कारावास दिया गया अथवा मृत्युदंड। पंजाब के भीखिविंद के निवासी सरबजीत सिंह इस बात का उदाहरण है। सरबजीत सिंह की कहानी को लेकर सन् 2016 में ओमंग कुमार ने 'सरबजीत' फिल्म का निर्माण किया। जिसमें निरपराधी सरबजीत पर अत्याचार के नमूने पेश किए गए। लेकिन फिल्म निर्माण में निर्देशक ने इस बात की ओर भी दर्शकों का ध्यान आकर्षित किया कि दुष्ट चक्रों के अलावा ऐसे भी लोग हैं जो दोनों देशों की शत्रुता का अंत कर भाईचारे के प्रति आग्रही हैं। सन् 2015 में बनी फिल्म 'बजरंगी भाईजान' का उदाहरण इस कथन की पुष्टि करता है। फिल्म की कहानी को इस तरह से बुना गया है जहाँ एक कट्टर हनुमानभक्त हिन्दू एक पाकिस्तानी बच्ची को उसके घर वापस भेजने के लिए यथासंभव कोशिश करता है। अपने उसूलों की कुर्बानी देकर वह अपने उद्देश्य में कामयाब होता है लेकिन पाकिस्तानी पुलिस के हाथों बंदी बन जाता है। तब पाकिस्तानी जनता एकजुट होकर प्रशासन के खिलाफ लड़ते हुए उसे उसके घर वापस भेजते हैं। दोनों देशों के आम जनता की इच्छा को ये फिल्म रेखांकित करती है। इसी तरह के विषय पर आधारित अन्य एक फिल्म है सन् 2016 में बनी फिल्म 'हेप्पी भाग जाएगी'। इस फिल्म की नायिका भी गलती से पाकिस्तान पहुँच जाती है जहाँ उसे पाकिस्तान के एक ऊंचे घराने से सहारा मिलती है और उन्हीं की मदद से वह सकुशल घर वापस आ पाती है। इसी तरह इन फिल्मों में दोनों पड़ोसी देशों के बीच सौहार्द के संपर्क को दिखाया गया है।

भारत-पाक विभाजन की त्रासदी पर बनी फिल्मों में अनेक छोटे-बड़े किरदारों के माध्यम से विभाजन की त्रासदी पर प्रकाश डाला गया है। इनमें ऐसी अनेक छोटी-बड़ी घटनाओं को प्रस्तुत किया गया है जिनसे यह सिद्ध हो जाता है कि विभाजन से सबसे अधिक साधारण जनता को ही क्षति पहुंची है। विभाजन साधारण जनता की इच्छा बिल्कुल नहीं थी। सांप्रदायिक कट्टरता को विभाजन ने अधिक शक्तिशाली बना दिया जिसका दुष्प्रभाव आज भी दोनों देशों को भुगतना पड़ रहा है। गौर से देखा जाय तो इन फिल्मों में मुख्य रूप से धार्मिक कट्टरता या सांप्रदायिकता पर मानवीयता की विजय को दिखाया गया है। लेकिन इसका मूल्य भी लोगों को जान देकर चुकानी पड़ रही है। सन् 2017 में निर्मित फिल्म 'बेगम जान' की कहानी रेडक्लिफ लाइन खींचने के उपरांत दोनों देशों के बँटवारे में आयी समस्याओं को उजागर करती है। सन् 1947 में सर सीरिल रेडक्लिफ द्वारा हिंदुस्तान और पाकिस्तान के विभाजन के उद्देश्य से जो सीमारेखा खींचीं गयी वह व्यावहारिक नहीं थी। फिल्म की कहानी के अनुसार रेद्क्लिफ लाइन बेगम जान के घर के बीच से गुजरती है, जिस कारण बेगम जान का घर जला दिया जाता है। इस फिल्म में संवेदनशील रूप में विभाजन की त्रासदी को दिखाया गया है। फिल्म में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि विभाजन से साधारण लोगों का कोई वास्ता नहीं था। कुछ लोग विभाजन का नाजायज फायदा उठा रहे थे और व्यक्तिगत लाभ के लिए हिंसा कर रहे थे।

भारत और पाकिस्तान के संबंधों को लेकर हास्य धर्मी हिंदी फिल्मों का भी निर्माण किया गया है। सन् 2013 में बनी फिल्म 'वार छोड़ ना यार', 2014 में बनी 'टोटल स्यापा', 2015 में बनी 'बैंगिस्तान' आदि फिल्में इस बात का उदाहरण है। इन फिल्मों में व्यंग्य के माध्यम से दोनों देशों के कटु संबंधों को सामने लाकर उन्हें नकारा गया है। फिल्मों के माध्यम से यह दिखाने की कोशिश की गयी है कि दोनों देश आपसी संबंधों को लेकर गलतफहमियों के शिकार हैं जिसे मिटाना असंभव नहीं है।

भारत-पाक संबंधों को मूलाधार बनाकर निर्मित फिल्मों के अलावा ऐसी भी अनेक फिल्में हैं जहाँ कहीं दोनों देशों के बीच के संबंध का उल्लेख भर मिलता है। उपकार(1967), 'मैं हूँ ना'(2004), 'एक था टाइगर'(2012) आदि फिल्में इस बात का उदाहरण है। सन् 2014 में बनी फिल्म 'पी.के.' में भी भारत

पाकिस्तान के बीच के कटु संबंध को मिथ्या प्रचार के रूप में उपस्थित किया गया है। जिससे यह सिद्ध किया गया है कि दोनों देशों की जनता के मन में बेकार ही संदेह और अविश्वास फ़ैले हुए हैं।

हिंदी सिनेमा में भारत विभाजन और उसके प्रभावों को अलग-अलग दृष्टिकोण से अवश्य प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इनकी मूल संवेदना एक ही है। जहाँ रिश्तों की कड़वाहट, अविश्वास, मूल से बिछड़ने का दु:ख, सांप्रदायिक दंगे, आतंकवाद और युद्ध आदि का वर्णन किया गया है। भारत-पाक विभाजन पर बनी फिल्मों की शृंखला में बदलते समय के साथ-साथ फिल्मों की कहानियों और उपस्थापन शैली दोनों में काफी बदलाव देखे जा सकते हैं। इस संबंध में एक आलोचक ने लिखा है- "सन् 1947 के भारत और पाकिस्तान, दोनों जगह बनने वाली ज़्यादातर विभाजनोत्तर फिल्मों में बार-बार दोहराए जानेवाले विषय किसी एकल परिवार के भीतर या प्रेमियों के बीच के अलगाव हैं- इन दोनों को विभाजन के दौरान जमीन और जनता के बँटवारे के रूपक की तरह पढ़ा जा सकता है। इस तरह 'राष्ट्र के रूप में परिवार' का रूपक जो विभाजन फिल्मों में केंद्रीय है दर्शकों के तादात्म्य को उकसाता है। विभाजन के पहले का रूमानी दौर, राजनेताओं पर दोषारोपण व्यक्तियों की वीरता, प्यार की जीत, विभाजन के हिंसक और खूनी दृश्य ये विभाजन-फिल्मों की कुछ कथानक रूढ़ियाँ हैं।"[1] भारत-पाक संबंधों को आधार बनाकर निर्मित पहले की फिल्मों में विभाजन की त्रासदी को जिस रूप में अंकित किया गया, वह बहुत ही मर्मस्पर्शी है। लेकिन कश्मीर मुद्दों को लेकर आतंकवाद और युद्धों ने जब ज़ोर पकड़ा तो फिल्मी कहानियों का रुझान भी उसी तरफ गया। कहानियों में पाकिस्तान से प्रायोजित आतंकवादी हमलों के पीछे भारत में घटित मुंबई हमले, दिल्ली हमले का हाथ रहा। इन फिल्मों में अविश्वास और घृणा की भावना अधिक प्रभावी रही।

भारत-पाक संबंधों पर निर्मित फिल्मों को ऐतिहासिक फिल्मी विधा कहा जा सकता है। इतिहास के साहचर्य में कल्पना के मिश्रण से भारत-पाक संबंधों पर फिल्मों का निर्माण किया गया। इस विधा के फिल्मों में आरंभिक दौर के फिल्मों से ज्यादा समकालीन फिल्मों में व्यावसायिकता अधिक देखने को मिलती है। इसलिए इन फिल्मों में अधिकाधिक 'मेलोड्रामा' का प्रयोग करते हुए पश्चिमी अभिव्यंजना पद्धति को अपनाया गया है। जहां अंत कभी-कभी दुखात्मक और प्रश्नसूचक होता है। सिनेमा का मुख्य उद्देश्य है मनोरंजन। भारत-पाक संबंध पर बनी फिल्मों की यह विशेषता है कि यह आम जनता के मनोभाव को उजागर करती है न कि किसी ठोस तथ्य को। इन फिल्मों में समाज के मानसिक दशा का यथार्थ चित्रण किया गया है। भारत-पाक संबंधों पर बनी प्रायः सभी फिल्में यह संदेश लोगों तक पहुंचाती है कि विभाजन से कभी किसी का भला नहीं हुआ। आतंकवाद और सांप्रदायिक दंगे सभी के लिए हमेशा हानिकारक रहे हैं। अपनी सृजनातमक शक्ति से ये फिल्में मनुष्यता और भ्रातृत्वबोध का प्रचार करने में सक्षम हैं। इन फिल्मों ने भारत और पाकिस्तान के विभाजन के राजनीतिक फैसले पर एक प्रश्नचिह्न भी छोड़ा है।

संदर्भ:

1. विश्वनाथ, गीता एवं मलिक, सलमा (2019). लोकप्रिय सिनेमा के जरिये 1947 का पुनरीक्षण: भारत और पाकिस्तान का एक तुलनात्मक अध्ययन. *आलोचना,* अप्रैल-जून 2019. पृ. सं- 102

सहायक ग्रंथ सूची:

1. गुप्त, डॉ. चन्द्रभूषण (2012). *सिनेमा और इतिहास.* शशि प्रकाशन, गाजियाबाद, प्रथम संस्करण.
2. जोशी, ललित (2012). *बॉलीवुड पाठ.* वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण.
3. पारख, जवरीमल्ल (2012). *साझा संस्कृति सांप्रदायिक आतंकवाद और हिंदी सिनेमा.* वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण.
4. ब्रह्मात्मज, अजय (2012). *सिनेमा समकालीन सिनेमा.* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण.
5. रे, सत्यजित (2007). *विषय चलचित्र.* रेमाधव पब्लिकेशन्स, नोएडा, प्रथम संस्करण.
6. शुक्ल, प्रयाग (2017). *जीवन को गढ़ती फिल्में.* अनन्य प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण.

●

जनवरी-मार्च 2019
ISSN: 2321-0443
UGC Journal No. 41285
ई-संस्करण सहित

ज्ञान गरिमा सिंधु

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

अंक : 61

गांधी मार्ग-150

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग) भारत सरकार
Commission for Scientific and Technical Terminology
Ministry of Human Resource Development
(Department of Higher Education)
Government of India

CS Scanned with CamScanner

UGC JOURNAL NO.41285

ISSN: 2321-0443

ज्ञान गरिमा सिंधु

(त्रैमासिक पत्रिका)

गांधी मार्ग-150

अंक-61

जनवरी-मार्च 2019

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

(उच्चतर शिक्षा विभाग)

भारत सरकार

2019

COMMISSION FOR SCIENTIFIC AND TECHNICAL TERMINOLOGY

MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT

(DEPARTMENT OF HIGHER EDUCATION)

GOVERNMENT OF INDIA

2019

CS Scanned with CamScanner

परामर्श एवं संपादन मंडल

प्रधान संपादक

प्रोफेसर अवनीश कुमार, अध्यक्ष

संपादक

डॉ. शाहजाद अहमद अधिकारी

सहायक वैज्ञानिक अधिकारी (राजनीति विज्ञान)

प्रकाशन

श्री शिव कुमार चौधरी, सहायक निदेशक

संपादन समिति

1. देवेन्द्र दत्त नौटियाल, पूर्व सचिव, वै. त. श. आयोग, नई दिल्ली
2. डॉ. राजेश कुमार शर्मा, निदेशक, गाँधी अध्ययन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)
3. डॉ. राजेन्द्र कुमार पाण्डेय, राजनीति विज्ञान विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ. प्र.)
4. श्री राजेश कुमार सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय, कुल्लू (हि.प्र.)
5. डॉ. रविन्द्र कुमार वर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, आर. एन. कॉलेज, हाजीपुर (बिहार)
6. डॉ. संजीव कुमार तिवारी, एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, महाराजा अग्रसेन कॉलेज, वसुन्धरा, नई दिल्ली
7. डॉ. राजीव रंजन गिरि, हिंदी विभाग, राजधानी कॉलेज राजा गार्डन, नई दिल्ली
8. डॉ. नावेद जमाल, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली
9. डॉ. राधा कुमारी, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, माता सुंदरी कॉलेज, नई दिल्ली
10. डॉ. संतोष कुमार सिंह, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, शहीद भगत सिंह कॉलेज, नई दिल्ली
11. डॉ. अभय प्रसाद सिंह, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, पी. जी. डी. ए. वी. कॉलेज, नई दिल्ली
12. डॉ. हरिराम परिहार, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय कॉलेज, जोधपुर (राजस्थान)
13. डॉ. दिनेश कुमार गहलोत, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान)
14. श्री. आदित्य अंशु, सहायक प्रोफेसर, नोएडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी, नोएडा (उ. प्र.)
15. डॉ. संजय शर्मा, सहायक प्रोफेसर, भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून (उत्तराखण्ड)
16. डॉ. प्रदीप्तो मुखर्जी, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग एच. एम. कॉलेज फॉर वुमेन, कोलकता (प.ब.)
17. डॉ. शिल्पा नंदी, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग खुदी राम बोस, सेन्ट्रल कॉलेज, कोलकता (प. ब.)
18. डॉ. रेणु सिंह, सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)
19. डॉ. मोहम्मद शब्बीर, सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, मोतीलाल नेहरू कॉलेज, दिल्ली
20. डॉ. अनुशब्द, सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर (असम)

CS Scanned with CamScanner

अनुक्रम

आलेख	लेखक	पृष्ठ संख्या
मानव, प्रकृति एवं पर्यावरण		
1. गाँधी का पर्यावरण-विषयक विचार	डॉ. राजेंद्र कुमार पांडेय	1
2. भारत में स्वास्थ्य चुनौतियाँ एवं गाँधीवादी निदान	प्रो.उशविंदर कौर पोपली, आनंद सौरभ	9
3. प्रकृति, संस्कृति और महात्मा	प्रेम प्रकाश	16
4. गाँधी-दर्शन में मानवाधिकारों की संकल्पना	डॉ. शशि वर्मा	23
5. गाँधी और पर्यावरण	उमेश कुमार	31
6. गाँधी और मानवाधिकार	डॉ. नरेश कुमार सिंह	35
आर्थिक आयाम		
1. संधारणीय विकास और गांधी –दर्शन	डॉ.शांतेष कुमार सिंह, डॉ.राकेश कुमारमीणा	41
2. गांधी का अर्थशास्त्र और नारी सशक्तिकरण	डॉ. नावेद जमाल, संजीव कुमार सिंह	50
3. खादी के पुनर्जन्म की कहानी	डॉ. पंकज कुमार सिंह	57
4. ग्राम स्वराज की सार्थकता	डॉ. राखी चौहान	65
5. ग्रामीण औद्योगीकरण एवं कम्युनिटी रेडियो	डॉ. रेणु सिंह	72
सामाजिक एवं शैक्षणिक सरोकार		
1. 'नयी तालीम': एक सामयिक शिक्षा –दर्शन	डॉ. डी. के. पी चौधरी	79
2. गांधी की नयी तालीम की प्रासंगिकता	डॉ. अनुशब्द	86
3. अस्पृश्यता का प्रश्न	डॉ. राजीव कुमार सिंह	92
4. संधारणीय विकास का शिक्षण प्रतिरूप	डॉ. ऋषभ कुमार मिश्र एवं डा. रजनीत	99

CS Scanned with CamScanner

गांधी की नयी तालीम प्रासंगिकता

डॉ. अनुशब्द[16]

21वीं सदी का भारत कई सवालों और विमर्शों से जूझ रहा है। देश की शिक्षा-व्यवस्था, विशेषकर प्राथमिक शिक्षा का स्वरूप कैसा हो? उन्हीं में से एक महत्वपूर्ण सवाल है। यह सोचने का विषय है कि शिक्षा संबंध तमाम संस्तुतियों, प्रस्तावों और अधिनियमों के बावजूद क्या वर्तमान शिक्षा-व्यवस्था, शिक्षा के मूल लक्ष्य तक पहुँचने में सफल हो पायी है? विभिन्न शिक्षाविदों का मत रहा है कि शिक्षा मनुष्य के निर्माण की प्रक्रिया है। ऐसे में आज मनुष्य जिस तेज रफ्तार से यंत्र में तब्दील हो रहा है वह कौन-सी प्रक्रिया की वर्तमान उपज या परिणति है? यह विचारणीय है। मूल्य-विहीन, संवेदन-शून्य, हिंसक मनुष्य का निर्माण करने वाली शिक्षा-व्यवस्था हमसे बार-बार अपनी दशा और दिशा पर पुनर्विचार करने की माँग करती है। इन्हीं सवालों के बीच हाल के दिनों में वैकल्पिक शिक्षा-व्यवस्था की बहस ने फिर से जोर पकड़ा है। वैकल्पिक शिक्षा-व्यवस्था से विद्वानों का आशय एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था से है जो भौतिक उपलब्धि को मानव विकास की कसौटी मानने वाली शिक्षा-व्यवस्था के बरक्स स्वावलंबन को बल देने वाली तथा सहयोग और सामूहिकता जैसे मानवीय मूल्यों की संवाहिका हो। इसी क्रम में जब हम भारतीय एवं पश्चिमी विचारक के शैक्षिक-चिंतन पर नजर डालते हैं तो महात्मा गांधी का शैक्षिक-दर्शन सहसा हमारा ध्यान अपनी ओर खींचता है। मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा में उपस्थित गुणों के सर्वांगीण विकास को शिक्षा कालक्ष्य मानने वाले गांधी का शैक्षिक चिंतन भारतीय परिवेश के लिए हर युग में प्रासंगिक प्रतीत होता है।

ध्यातव्य है कि गांधी के शिक्षा संबंधी विचार देश की आवश्यकताओं की उपज हैं, अतः वे व्यावहारिक धरातल पर उतारे जाने योग्य हैं। 'आत्मानुभूति' को शिक्षा का प्रधान उद्देश्य मानने वाले गांधी जिस शिक्षा की वकालत करते हैं वह मनुष्य को एक बेहतर मनुष्य बनाने के लिए है, न कि एक वस्तु, जो बाजार के समक्ष अपनी कीमत लगवाने के लिए समस्त मानवीय-मूल्यों को ताक पर रख दे। इसलिए चरित्र के विकास को भी गांधी ने शिक्षा के प्रधान उद्देश्यों में शामिल किया है। गांधी के शैक्षिक चिंतन का साकार रूप हम 'बुनियादी शिक्षा' या 'नयी तालीम' के रूप में पाते हैं। उनकी इस 'नयी तालीम' की पृष्ठभूमि में अतीत की स्मृति, वर्तमान का बोध और भविष्य की चिंता की जटिल समग्रता शामिल थी। यह केवल विचार के रूप में नहीं, हृदय के विवेक के रूप में उपस्थित थी। इसी हृदय के विवेक को जाग्रत एवं विकसित करने को गांधी शिक्षा का मूलभूत प्रयोजन मानते थे। इसलिए औपनिवेशिक शिक्षा को खारिज करते हुए नयी तालीम को प्रतिष्ठित करते हैं। 1937ई. में वर्धा शिक्षा सम्मेलन में महात्मा गांधी ने मूल/बुनियादी शिक्षा संबंधी अपनी धारणा को व्यक्त करते हुए कहा था- 'देश की वर्तमान शिक्षा पद्धति किसी भी तरह की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकती है। इस शिक्षा

[16] सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर (असम)

CS Scanned with CamScanner

UGC Approved Journal No. 49321 **Impact Factor : 2.591** **ISSN : 0976-6650**

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 10, No. 3.1 **Year - 10** **March, 2019**

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor in Chief
Prof. Abhijeet Singh

Editor
Prof. Vashistha Anoop
Department of Hindi
Banaras Hindu University
Varanasi

Dr. K.V. Ramana Murthy
Associate Professor of Commerce
and Vice Principal
Vijayanagar College of Commerce
Hyderabad

Published by
SRIJAN SAMITI PUBLICATION
VARANASI
Mob. **9415388337,** E-mail : **shodhdrishtivns@gmail.com,** Website : **shodhdrishtijournal1.com**

विषयानुक्रमणिका

		पृष्ठ संख्या
☛	प्रेमचन्द : व्यक्तिगत चेतना से सामाजिक चेतना **अंकिता कनौजिया**	1-3
☛	महात्मा गाँधी और श्रीमद्भगवद्गीता : प्रेरणा एवं प्रभाव **अंतिमा सिंह**	4-6
☛	सुभाष चन्द्र बोस : जीवन दर्शन एक परिदृश्य **डॉ0 जया**	7-10
☛	समकालीन कला के विकास में आकार कला समूह की भूमिका (राजस्थान के सन्दर्भ में) **राहुल उषाहरा**	11-14
☛	भारतीय पारम्परिक लोक चित्रकला तथा हस्त कला का केन्द्र : वाराणसी **हिमानी पंचपाल**	15-18
☛	Air Pollution and Human Health **Dr. Kailash Nath Singh**	19-24
☛	National System of Education for Rural People in India: A Study **Nitika Jiya Sinha**	25-27
☛	Effect of Psychological Factors on Burnoutness : A Study **Ritika Riya Sinha**	28-30
☛	ओरछा दुर्ग के स्मारकों में नृत्य प्रसाद 'रायप्रवीण एवं रायप्रवीण महल' **डॉ0 बलवन्त सिंह भदौरिया**	31-32
☛	नाथद्वारा की चित्रकला का विकास एवं प्रमुख पिछवई **ओमप्रकाश माहौर**	33-34
☛	मौर्योत्तर युगीन बौद्धकला में अंकित वेशभूषा **डॉ0 सीमा**	35-40
☛	काशीको नेपाली साहित्यिक पत्रकारिता **अमित थापा**	41-44
☛	भारतीय समाज में दलित उत्थान हेतु किए गए संवैधानिक प्रावधान **कमलेश कुमार**	45-48
☛	मध्य एशिया में ऊर्जा सुरक्षा की राजनीति **अविनाश चन्द्र**	49-52
☛	कार्यशील महिलाओं की सामाजिक परिवर्तन में सहभागिता : हस्तशिल्प एवं वस्त्र उद्योग के द्वारा **सन्तेश्वर कुमार मिश्र एवं डॉ0 हरिओम त्रिपाठी**	53-56
☛	हिंदी सिनेमा में चित्रित स्त्री छवि **उन्मेषा कोंवर/डॉ0 अनुशब्द**	57-60

UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 2.591
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 10, No. 3.1, March, 2019 ISSN : 0976-6650

हिंदी सिनेमा में चित्रित स्त्री छवि

उन्मेषा कोंवर / डॉ. अनुशब्द
हिंदी विभाग तेजपुर विश्वविद्यालय, असम

सिनेमा जनसंचार के लोकप्रिय एवं सबसे प्रभावशाली माध्यमों में से एक है। यह मानव जीवन एवं समाज की कलात्मक अभिव्यक्ति है। इसमें विभिन्न अनुभावों, संवादों, गीतों, आदि के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति होती है। जैसे साहित्य में अपने समय और समाज की यथार्थ अभिव्यक्ति होती है, उसी तरह सिनेमा भी अपने देश-काल का साक्षी होता है। सिनेमा कला, साहित्य, संस्कृति और समाज का जीवंत दस्ताबेज होता है। इनकी आपसी अंतरंगता को भारतीय सिनेमा एक लंबे अर्से से सर्जनात्मक तरीके से व्यक्त करता रहा है। और, अपने सामाजिक दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वाह करता रहा है। समाज का अच्छा-बुरा, उन्नति-अवनति, उत्थान-पतन सभी कुछ सिनेमा और साहित्य दोनों के माध्यम से उजागर होता है। इनमें हम भारतवर्ष का इतिहास, आजादी का संघर्ष और परिणाम, उत्सव, रीति-रिवाज, खान-पान, खेल-कूद, मनोविज्ञान, टेक्नॉलॉजी, राजनीति, आतंकवाद, दुर्नीति, शोषण, पारिवारिक समस्या, न्याय-अन्याय के स्वरूप, राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय चुनौतियाँ आदि अनगिनत विषयों को देख सकते हैं। अन्य सभी विषयों के साथ-साथ ऐसी अनेक फिल्में बनी हैं जिनमें भारतीय नारी के व्यक्तित्व, उनकी कठिनाइयाँ, सामाजिक मर्यादा, शोषण आदि को रेखांकित किया गया है।

भारतीय हिंदी सिनेमा का मूल आधार है भारतीय समाज। इसलिए फिल्मों में चित्रित स्त्री छवि को देखने से पूर्व भारतीय समाज में नारी की स्थिति पर प्रकाश डालना आवश्यक है। भारतीय समाज में स्त्री छवि का प्रश्न एक जटिल प्रश्न है। क्योंकि इस समाज में अनेक जाति और धर्म मौजूद हैं और इन सभी जातियों और धर्मों में नारी का अलग-अलग स्थान है। किसी भी समाज में भौगोलिक, सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति के अनुरूप नारी के स्थान का निरूपण किया जाता है। भारतीय समाज की ओर दृष्टि डालने से यह ज्ञात होता है कि यहाँ की सामाजिक संरचना में नारी के लिए कुछ निर्धारित कर्तव्यों और दायित्वों को सुनिश्चित किया गया है। आर्य सभ्यता के विकाश के समय 'मातृदेवता' का विशेष महत्व था जिसे सिंधु संस्कृति के अवशेषों ने प्रमाणित किया है। पौराणिक कथाओं में देवताओं के समान देवी को महत्व दिया गया है। नारी जीवन की गुलामी का प्रश्न शायद कृषि सभ्यता के विकास के साथ जुड़ी है। क्योंकि कृषि क्षेत्र में ही कार्यक्षेत्र और दायित्व के बढ़ने के साथ-साथ नारी का सामाजिक डायरा भी संकोचित हो गया। कृषि सभ्यता के विकास ने पुरातन भारतीय समाज में विवाह को अधिक महत्व प्रदान किया और नारी का शोषण वहीं से प्रारम्भ हुआ। वेदकालीन समाज में स्त्री की स्थिति इतनी दुर्बल नहीं थी। उन्हें वेदों के पठन-पाठन और अध्यापन की अनुमति थी। 'लोपामुद्रा', 'विश्वावरा', 'घोषा' आदि नारी इस बात का उदाहरण हैं। लेकिन जाति-प्रथा के आरंभ के साथ नारी की सामाजिक स्थिति में बहुत अधिक बदलाव आया। 800 ई. पूर्व में वैदिक युग की समाप्ति के साथ संहिताओं और धर्मसूत्रों में नारी के लिए कुछ अनिवार्य नियम बनाए गए। इनमें उल्लेखनीय स्थान है 'मनुस्मृति' या मनुसंहिता का। इनमें दी गयी नारी के कुंवारेपन, विवाहित स्त्री की शील की शुद्धता, विवाह का धार्मिक महत्व, विधवाओं का जीवन और सतीप्रथा, स्त्रियों की आचरण संबंधी पाबन्दियाँ, कन्यादान और कन्याशुल्क की परंपरा, स्त्री की अशुद्धता, वेदाध्ययन और धार्मिक अनुष्ठानों का स्त्रियों द्वारा वर्जन आदि पर अनेक नियम लागू किए गए जो स्त्री के हित में नहीं थे। इन नियमों ने स्त्री को सामाजिक रूप में दुर्बल, पुरुषाश्रित और अछूत बना दिया, मनुस्मृति में स्त्री को एक लोभ या लालच के रूप में देखा गया।

स्मृतियों और संहिताओं के बाद का काल 'रामायण', 'महाभारत' का काल रहा। इनमें वर्णित समाज में भी नारी अवज्ञा के पात्र रही। इस समय के समाज में नारी केवल पुरुषों की अनुगामिनी बनकर रह गयी। महाभारत या रामायण काल की जाति प्रथा को बौद्ध काल में सर्वप्रथम चुनौती मिली। इस काल में नारी के

स्थिति में काफी बदलाव आया, बौद्ध धर्म में नारी को अवज्ञा की दृष्टि से नहीं देखा गया। शिक्षा और संपत्ति में नारी के समअधिकार को बौद्ध धर्म ने अपनाया। पुरुषों के समान न होने पर भी स्त्रियों को धर्म का अधिकार दिया गया। लेकिन इसके बाद मुगल काल में भारतीय स्त्री की अवस्था और अधिक हीन हो गया, यह वह समय है जब अशिक्षा, स्त्री भ्रूण हत्या, पर्दा प्रथा, विधवा विवाह पर पाबंदी आदि के साथ-साथ स्त्री शारीरिक शोषण का भी शिकार बनी। लेकिन भक्तिकालीन संतों के आविर्भाव से धार्मिक सुधार और अंधविश्वासों का विरोध हुआ।

ब्रिटिश काल में भारतीय नारी को एक अलग सामाजिक परिवेश मिला। अंग्रेजों ने नारियों में शिक्षा का प्रचार प्रारंभ किया। ईसाई मिशनरीयों ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विदेशों से आयी महिलाओं ने भारतीय नारियों में एक शक्ति का संचार किया। सन 1795 और 1805 में शिशुहत्या पर, 1829 में सती प्रथा पर पाबंदी लगाया गया। सन 1856 में विधवा विवाह पर से पाबन्दियों को हटाकर भारतीय नारी को जैसे पुनर्जीवन दिया। स्वाधीनता आंदोलन में भारतीय स्त्रियों ने भी सशक्त भूमिका का निर्वाह किया। गांधीवादी राजनीति में नारी के लिए उदारवादी दृष्टिकोण को अपनाया गया। स्वतन्त्रता से पूर्व के समाज के विकास के साथ-साथ भारतीय नारियों ने अपनी कमजोर स्थिति को मजबूत करने के लिए कभी विद्रोह किया तो कभी चुप रहकर झेलती गयी। उन्नीसवीं सदी में रमाबाई, आनंदीबाई जोशी, तरु दत्त आदि ने स्त्री शिक्षा का प्रचार-प्रसार और स्त्रियों की सामाजिक स्थिति की उन्नति के लिए नई जंग छेड़ दी। स्त्रियों के हक में नए-नए कानून बनाए गए। स्वतंत्रता के उपरांत भारतीय संविधान में स्त्री के अधिकारों, शोषण आदि के लिए कानून पारित किया गया। धीरे-धीरे स्थितियाँ बदली, समाज में परिवर्तन आया। भूमंडलीकरण और बाजारवाद के इस दौर में आर्थिक आंदोलन के चलते नारी भी सशक्त, स्वतंत्र और आधुनिक बनी। स्त्रियाँ केवल घरेलू कामकाजों में बंदी न रहकर हर क्षेत्र में अपना कदम रखने लगी। नृत्य-गीत, अभिनय से लेकर मीडिया, विज्ञान व तकनीकी क्षेत्र व राजनीति में आधुनिक स्त्री पुरुषों के साथ कदम मिलाकर आगे बढ़ रही हैं।

बदलते हुए भारतीय समाज और परिवार में पुरातन से लेकर आधुनिक स्त्री छवि को प्रामाणिकता और जीवंतता के साथ प्रस्तुत करने का एक सशक्त माध्यम है हिंदी सिनेमा। हिंदी सिनेमा का इतिहास सौ साल से भी अधिक पुराना है। सन 1931 में बनी पहली बोलती फिल्म 'आलमआरा' के बाद हिंदी फिल्मों ने कभी पीछे मूढ़कर नहीं देखा। नायकप्रधान होते हुए भी हिंदी सिनेमा में स्त्री जीवन को भी प्रारम्भ से ही केंद्र में रखा गया है। इन फिल्मों में सामाजिक, राजनीतिक, पारिवारिक आदि अलग-अलग कहानियों के परिप्रेक्ष्य में स्त्री जीवन के प्रायः सभी पहलुओं को देखने की कोशिश की गई है। नायक प्रधान फिल्मों की प्रधानता होने पर भी जैसे-जैसे हिंदी सिनेमा परंपरा आगे बढ़ने लगी वैसे-वैसे नारी जीवन की समस्याओं को भी संजीदगी के साथ उठाया जाने लगा।

सामाजिक हिंदी फिल्मों में भारतीय स्त्री छवि को मूलतः दो रूपों में अंकित किया गया है। पहला रूप है शिक्षित, परिवार के प्रति समर्पित, समर्पण और त्याग की मूरत नारी की। अधिकांश सामाजिक हिंदी फिल्मों में नारी के इस रूप को माता, पत्नी, बहन या प्रेमिका के रूप में चित्रित किया गया है। सामाजिक फिल्मों में चित्रित नारी का दूसरा रूप है गंभीर, अपने आजीविका और सामाजिक स्थान के प्रति सदा सचेत कामकाजी सशक्त महिलाएं। ये अपने आत्मसम्मान और मर्यादा के लिए सबकुछ करने को तैयार रहती हैं। इसके अलावा घरेलू हिंसा या कूटनीति से प्रभावित खलनायिकाओं का चित्रण भी सामाजिक फिल्मों में सहज ही देखी जा सकती है। कभी-कभी फिल्मी कहानियों में स्त्रियों को बेबस और लाचार दिखाया गया है जहाँ उसपर अनेक अत्याचार किए जाते हैं तो कहीं पर उसे ही सबकुछ दिखाया जाता है जहाँ पति के छोड़ जाने पर वह सारे संसार का भार उठाती है। सन 1957 में निर्मित फिल्म 'मदर इंडिया' में इसी तरह के स्त्री चरित्र का अंकन देखने को मिलता है। हर तरह के शोषण और अन्याय से पीड़ित होकर भी एक किसान स्त्री अपने गाँव की उन्नति के लिए अपने बेटे तक को कुर्बान करने से पीछे नहीं हटती। वह अपने ऊपर हो रही हर जुल्म और शोषण का दृढ़ता से सामना करती है। नारी जीवन की संवेदनाओं को 2001 में बनी फिल्म 'लज्जा' में भी संजीदगी से उठाया गया है। इस फिल्म में चार ऐसे नारी चरित्रों को रेखांकित किया गया है जो अलग-

अलग परिवेश में रहकर सामाजिक अन्याय का विरोध करती हैं। कभी नारी दहेज का विरोध करती है तो कभी पुरुषप्रधानता का। कभी शारीरिक शोषण का तो कभी मानसिक शोषण का।

सत्तर के दशक की फिल्मी धारा में दाम्पत्य संबंधों के टूटन को रेखांकित किया गया जिनमें अंत में पुनः मिलन को भी दिखाया गया है। 'कोरा कागज'(1974), 'ये कैसा इंसाफ'(1980), 'दूरियाँ'(1979), 'जुदाई'(1980), 'थोड़ी सी बेवफाई'(1980) आदि फिल्में इस बात का उदाहरण है। इन फिल्मों में परिवार को समर्पित नारियों को चित्रित किया गया है। इन फिल्मों में चित्रित नारियों के लिए त्याग, धैर्य और आदर्श को सर्वोपरि है। लेकिन अस्सी और नब्बे के दशकों में निर्मित फिल्मों में इसकी विपरीत छवि देखने को मिली। इन फिल्मों में दिखाये गए अधिकांश स्त्री घर के चार दीवारी में कैद रहनेवाली स्त्रियाँ नहीं हैं। 'सुबह'(1982), 'अर्थ'(1982), 'बाजार'(1982), 'मृत्युदंड'(1997), 'अस्तित्व'(2000) आदि फिल्मों में विवाह से मुक्त होकर जीवन निर्वाह में सक्षम नारी की कहानी वर्णित है। इन फिल्मों में वर्णित नारी पात्र मजबूत, जागृत और कैरियर के प्रति समर्पित होती हैं। सन 1985 में निर्मित 'राम तेरी गंगा मैली हो गई' फिल्म में एक ऐसे नारी चरित्र को अंकित किया गया जो त्याग और समर्पण के साथ मजबूत खड़ी रहती है। जो अपने और अपने संतान के हक की लड़ाई में हर मुश्किल का सामना करने को तैयार रहती हैं।

सन 1994 में निर्मित फिल्म 'बैंडिट क्वीन' सच्ची घटना पर आधारित फिल्म है। इस फिल्म में डाकू 'फूलन देवी' के जीवन को अंकित किया गया है, जो शैशवावस्था में ही अपने ही परिजनों द्वारा बलात्कार का शिकार होती है। उसके बाद दलित ब्च्ची फुलन का ऊंची जाति के लोगों द्वारा सामूहिक बलात्कार किया जाता है। फूलन अपने ऊपर हुए अत्याचारों का प्रतिकार लेने के लिए डाकू बन जाती है और उन्हें मारकर जेल चली जाती है। अपने अथक परिश्रम के बल पर फूलन दो बार सांसद भी चुनी जाती है, लेकिन अंत में उसकी हत्या कर दी जाती है। इस संबंध में आलोचक रूपेश शुक्ल ने लिखा है- 'बैंडिट क्वीन हिंदी सिनेमा के इतिहास में स्त्री की सबसे यथार्थवादी और मजबूत तस्वीर पेश करती है।" नारी जीवन की सच्ची घटनाओं पर आधारित फिल्म 'मेरी कॉम'(2014) और 'दंगल'(2016) का निर्माण हाल ही में हुआ है। मेरी कॉम भारतीय महिला मुक्केबाज हैं जिनके संघर्ष को फिल्म में दर्शाया गया है। पूर्वोत्तर भारत के छोटे से राज्य मणिपुर की रहनेवाली मेरी कॉम को जीवन में अनेक समस्याओं का सामना करना परा। कभी दंगे फसाद के नाम पर तो कभी पूर्वोत्तर के निवासी होने के नाम पर। पर जीवन की चुनौतियों का साहस के साथ मुक़ाबला करते हुए मेरी कॉम जिंदगी में आगे बढ़ती ही रही। 'दंगल' फिल्म में भारतीय महिला पहलवान गीता फोगाट और बबीता फोगाट के जीवन को आधार बनाया गया है। हरियाणा के निवासी दोनों बहनों के जीवन में उनके पिता का बहुत अधिक प्रभाव रहा। पुरुषप्रधान समाज की पुरुषप्रधान मानसिकता से लड़कर जीवन में अच्छी मुकाम हासिल करने का संघर्ष दर्शकों में उत्साह भर देता है।

हिंदी फिल्मों में वेश्याओं के जीवन पर संजीदगी से प्रकाश डाला गया है। पाकीजा(1972), अदालत(1976), उमराव जान (1981), देवदास(2002) आदि फिल्मों के माध्यम से दर्शकों तक यह संदेश पहुंचाया जा रहा है कि वेश्याएँ भी इंसान होती है। उन्हें भी सामाजिक सम्मान प्राप्त करने का अधिकार है। सन 1993 में निर्मित 'दामिनी' एक उल्लेखनीय फिल्म है जहाँ बलात्कार जैसी समस्या पर प्रकाश डाला गया है। फिल्म की नायिका एक सच्ची स्त्री है जो अपने नौकरानी पर हुए बलात्कार का न्याय दिलाने के लिए अपने पति और परिवार के विरुद्ध खड़ी हो जाती है। 2001में बनी फिल्म 'चाँदनी बार' नारी पर हो रहे अत्याचार का प्रतीक है। सामाजिक शोषण के चलते फिल्म की नायिका मुमताज़ को वेश्यावृत्ति ग्रहण करने पर मजबूर होना परता है। वे जीवन को सार्थक बनाने की खोज में रहती हैं। सांप्रदायिक दंगों के कुप्रभाव से पीढ़ित नारी के संघर्षों का सफल चित्रण इस फिल्म में किया गया है। इस फिल्म में नायिका की मामा ही उसका बलात्कार करता है। नारी का रूप ही कभी-कभी उसकी दुर्बलता बन जाती है। इस बात का प्रमाण इन फिल्मों में मिलती है। हाल ही बनी फिल्म 'नो वन किल्ड जसिका'(2011), 'पिंक'(2016), 'मॉम'(2017) आदि में बलात्कार जैसी संगीन जुल्म को गंभीर समस्या के रूप में दिखाया गया है। इन फिल्मों के नारी पात्र आधुनिक हैं जो अपने ऊपर हुए अत्याचार का प्रतिकार लेती हैं। इन फिल्मों ने प्रभावशाली ढंग से समाज को

यह संदेश पहुंचाया है कि वर्तमान समय में नारी अबला नहीं है। नारी को अपने स्वतंत्र जीवन जीने का अधिकार है और इसमें उसे कोई बाधित नहीं कर सकता।

बीसवीं सदी में भूमंडलीकरण और बाजारबाद का प्रभाव साहित्य, संस्कृति, समाज सभी पर पड़ा। फिल्म भी इनसे अछूता नहीं रहा। भूमंडलीकरण और बाजारवाद के चलते लोगों के सोच-विचार, रहन-सहन, खान-पान सभी में भारी परिवर्तन आया। इसलिए बीसवीं सदी के फिल्मों में नारी चित्रन भी अलग रूप में होने लगा। सन 2010 में निर्मित फिल्म 'राजनीति' में एक ऐसे नारी को चित्रित किया गया जो विधवा होते ही राजनीति में उतर जाती है अपने बिवशता को ही अपना सबसे बड़ा हथियार बना लेती है। जीवनभर अन्यों पर आश्रित स्त्री यह समझ जाती है कि उसके हर समस्या का हल केवल उसीके पास है। केवल धैर्य और साहस से वह अपने आपको अजेय कर सकती है। 'अस्तित्व'(2000), 'इंग्लिश-विंग्लिश'(2012), 'क्वीन'(2014), 'सुपर नानी'(2014) आदि फिल्मों के नारी पात्र भी यही संदेश देती है। कुछ फिल्मों की नारी इतनी अधिक शक्तिशाली हैं कि कोई पुरुष उनपर अत्याचार नहीं कर सकता। उदाहरणस्वरूप 'कहानी'(2012), 'अकिरा'(2016), 'मॉम'(2017) आदि फिल्मों की नायिकाएँ। अपने ऊपर हुए अन्याय का प्रतिशोध लेने के लिए ये नायिकाएँ अकेली निकल परती हैं। आधुनिक जमाने की मुक्त सोच विचार और ग्लेमर के प्रति आकर्षित नारी का चित्रण हमें 'फेशन'(2008), 'हीरोइन'(2012), 'कॉकटेल'(2012), 'डीयर जिंदगी'(2016) आदि फिल्मों में देख सकते हैं। जो जीवन को स्वतन्त्रता से अपने दम पर जीने तो निकल परती हैं लेकिन रास्ते में अनेक बाधाओं से जूझकर थक हार जाती है और फिरसे उठकर आगे बढ़ती है। सन 2016 में बनी 'की एंड का' फिल्म में समाज में नारी और पुरुष के समान अधिकार की बात कही गई है।

इसी तरह हम फिल्मों में वर्णित तमाम ऐसे नारी पात्रों को देख सकते हैं जो वास्तव में भारतीय नारी जीवन के अलग-अलग समस्याओं को प्रतिफलित करती हैं। समय और परिवेश के मांग के अनुसार हिंदी फिल्मों का निर्माण तीव्र गति से हो रहा है। स्वतंत्रता से पूर्व के समय में पौराणिक कथाओं पर आधारित फिल्में बनती थी जहाँ के नारी पात्र त्याग, स्वामीभक्ति की प्रतीक हैं। उस वक्त बने समाज के रूढ़ि और अंधविश्वास विरोधी फिल्मों में नारी का चित्रण मांग में सिंदूर भरी, गले में मंगलसूत्र डाली हुई स्त्रियाँ थी जिनके जीवन में परिवार के आगे कुछ नहीं था। स्वतंत्रता के बाद के फिल्मों में आधुनिकता का बहार आया। विभाजन के दौरान नारी पर हुए अत्याचार से लेकर नारी स्वतन्त्रता, नारी के शारीरिक व मानसिक शोषण, नारी की स्थिति में आए परिवर्तन को दिखाया गया। सिनेमा का उत्तरदायित्व यहीं पर बढ़ गया। दुर्भाग्य की बात यही है कि कुछ सस्ते मनोरंजनवादी फिल्मों में नारी को उपभोग्य वस्तु की तरह दिखाने की परंपरा वर्तमान चल पड़ा है। लेकिन आवश्यकता है कि नारी कि स्थिति में सुधार लाया जाए, अश्लीलता से अलग उनकी पहचान, उनकी उन्नति, उनकी मर्यादा को रेखांकित किया जाये ताकि आने वाली पीढ़ी को स्वस्थ नजरिया और सोच मिल सकें।

संदर्भ:

1. शुक्ल, रूपेश(सं) महेंद्र प्रजापत, भीगी-भीगी लड़की के बूमबाट होने की दास्तान, *समसामयिक सृजन*, अक्तूबर-मार्च 2012-2013, पृ.- 66

सहायक ग्रंथ सूची:

1. टंडन, डॉ. पुरनचंद एवं तिवारी, डॉ. सुनील कुमार(सं). *साहित्य सिनेमा और समाज.* नव उन्नयन साहित्यिक सोसाइटी, पश्चिम बिहार, नई दिल्ली, 2017.
2. भारद्वाज, विनोद(1985). *नया सिनेमा.* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
3. तिवारी, सुरेन्द्र नाथ(1996). *भारतीय नया सिनेमा.* अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली.
4. दूबे, मंजूलिका(1993). *भारतीय सिनेमा-1992.* फिल्म महोत्सव निदेशालय, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.
5. जमाल, अनवर एवं चटर्जी, सैबल(2006). *हॉलीवुड बॉलीवुड.* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
6. कोरे, सुलभा(2019). *भारतीय समाज हिंदी सिनेमा और स्त्री.* अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद.

⌘

ISSN 2321-4945

द्विभाषी राष्ट्रसेवक

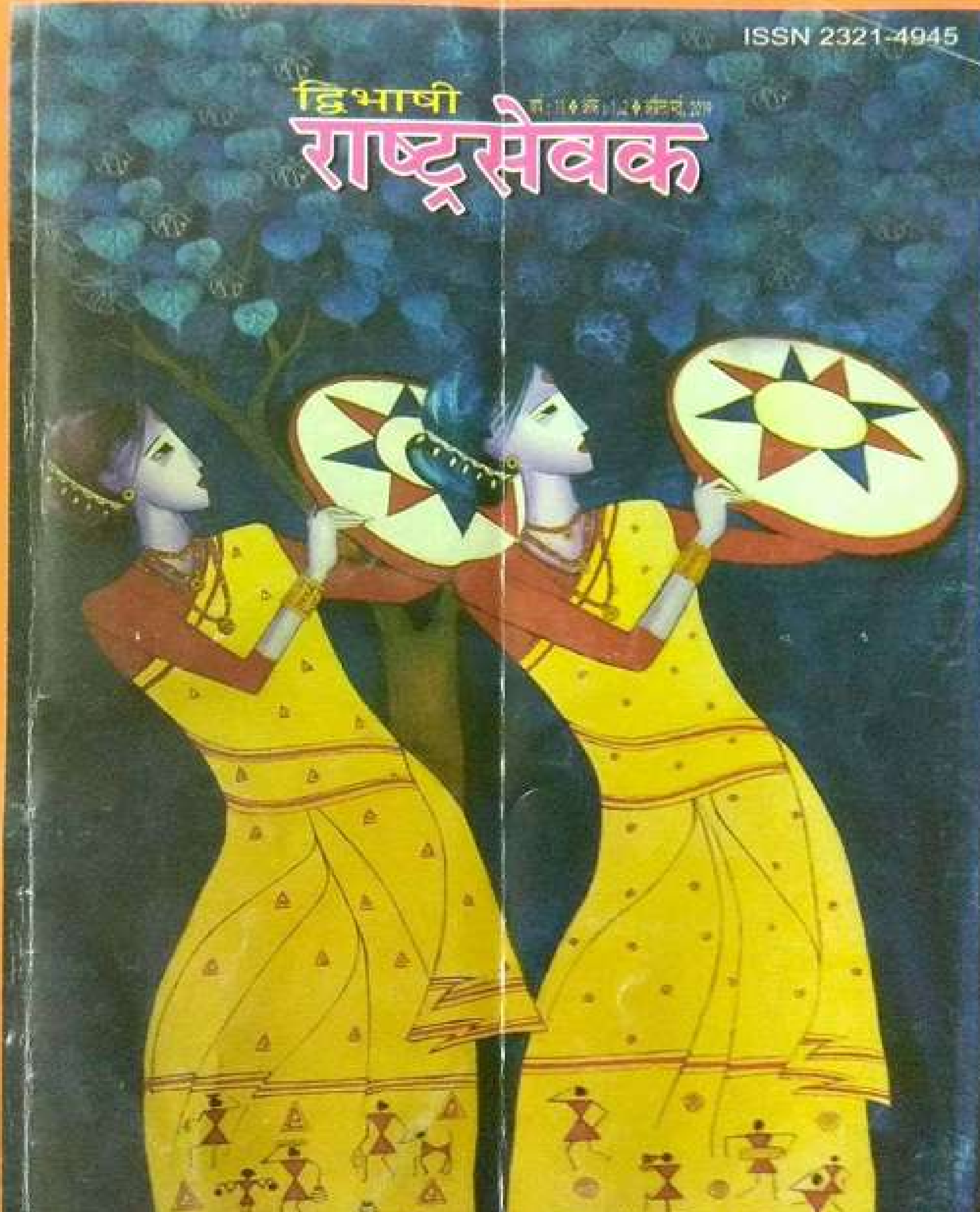

CS Scanned with CamScanner

एक हृदय हो भारत जननी

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी

[केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित]

सलाहकार

श्री हरिकांत नाथ

डॉ. अच्युत शर्मा

डॉ. नारायण तालुकदार

प्रो. दिलीप कुमार मेधी

संपादक

डॉ. क्षीरदा कुमार शइकीया

(मो. 9435340285)

कार्यकारी संपादक

श्री धीरेन चंद्र शर्मा

(मो. 6001523674)

शब्द-संयोजन व अलंकरण

रति कांत कलिता

वार्षिक शुल्क : दो सौ रुपये

अर्द्धवार्षिक : सौ रुपये

एक प्रति : बीस रुपये

प्रकाशक

डॉ. क्षीरदा कुमार शइकीया

मंत्री, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

गुवाहाटी-781032

'द्विभाषी राष्ट्रसेवक' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखक के हैं। संपादक या प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

लेखादि भेजने का पता :

संपादक, द्विभाषी राष्ट्रसेवक

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,

रूपनगर, गुवाहाटी-781 032

फोन : (0361) 2462811, 2463394

फैक्स : 0361 - 2463394

Postal Rgd. No. GH-127/2019-2021 ISSN 2321-4945

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का

साहित्य-कला-संस्कृति विषयक मासिक मुख-पत्र

द्विभाषी राष्ट्रसेवक

वर्ष : 11 अप्रैल-मई, 2019 अंक : 1, 2

विषय-सूची

हिंदी विभाग

- सामयिकी — 2
- प्रेम और भाइचारे का प्रतीक - रंगाली बिहू — रामनाथ प्रसाद — 3
- बहागीर बिया : असम में वसंत — अजयेंद्रनाथ त्रिवेदी — 6
- प्रासंगिकता का प्रश्न और कबीर की कविता — डॉ. अनुशब्द, डॉ. चारु गोयल — 9
- भक्त सम्राट गुरु रविदास — शंकर प्रसाद साहू — 13
- यशपाल की कहानियों में यथार्थ चित्रण — पल्लबी दास — 16
- विज्ञापनों में नैतिकता का सवाल — प्रवीण बोरा — 20
- हमारा भारत/भूल गया क्यों इंसान (कविता) — आकाश गुप्ता — 24
- समिति समाचार — 25

অসমীয়া বিভাগ

- বিভিন্ন মনিষীৰ দৃষ্টিত বিহু আৰু বিহুগীত — মহম্মদ শিকদাৰ — 31

लेखक/लेखिकाओं से अनुरोध : • 'द्विभाषी राष्ट्रसेवक' के लिए भेजे जाने वाले लेखादि साहित्य, कला, संस्कृति विषयक होने चाहिए। • भेजे गये लेखादि साफ अक्षरों में या टाइप कराकर ही भेजें। • अनूदित लेखों के लिए मूल लेख का उल्लेख करना अनिवार्य है। • सभी कानूनी विवादों का निपटारा गुवाहाटी न्यायालय के अधीनस्थ होगा।

Scanned with CamScanner

प्रासंगिकता का प्रश्न और कबीर की कविता

✍ डॉ. अनुशब्द एवं डॉ. चारु गोयल

साहित्य के संदर्भ में प्रासंगिकता का अर्थ है किसी भी रचना या रचनाकार का कालजयी एवं कालजीवी होना। प्रासंगिकता समाजशास्त्रीय उपकरणों से तय होती है और इन समाजशास्त्रीय उपकरणों का संबंध केवल साहित्य से नहीं होता बल्कि यह इतिहास से भी अभिन्न रूप में जुड़ा होता है। रचना की प्रासंगिकता के संबंध में मैनेजर पांडेय का मत दृष्टव्य है-'कोई भी सार्थक रचना इतिहास की उपज होती है, लेकिन उसका अपना भी एक इतिहास होता है, जिसे वह स्वयं बनाती है। उसका वर्तमान होता है तो उसका अतीत भी होता है। उसके पाठकीय ग्रहण का वर्तमान होता है तो उत्पत्तिमूलक अतीत भी होता है। इन दोनों के द्वंद्वात्मक संबंध के बोध के आधार पर ही किसी रचना की प्रासंगिकता का निर्णय हो सकता है।' (आलोचना की सामाजिकता, पृष्ठ-292) कबीर के काव्य के संदर्भ में जब हम उपर्युक्त कथन की मीमांसा करते हैं तो पाते हैं कि कबीर के काव्य का संबंध न सिर्फ अपने समय और अतीत से है, बल्कि उसमें भविष्य की आहट भी है। यही कारण है कि कबीर जितने प्रासंगिक अपने समय में थे, कई मायनों में उससे ज्यादा प्रासंगिक आज नजर आते हैं।

कबीर जिस भारतीय समाज में पैदा हुए थे, वह बहुत उथल-पुथल का समय था। उसमें संस्कृति, धर्म और विचार की अनेक तेज धाराएं परस्पर टकरा रही थीं। एक ओर हिंदू समाज की भेदभाव पर आधारित जाति-व्यवस्था की संरचना थी तो दूसरी ओर इस्लाम था, जिसमें उग्रता थी। उसमें धार्मिक स्तर पर समानता के बावजूद सामाजिक विषमता थी। उसके विरुद्ध प्रेम की पीर का संदेश देने वाले सूफी संत थे। साधारण जनता इस भंवर जाल में फंसी हुई थी। हिंदू जनता जिस तरह जाति-व्यवस्था के भेदभाव और धार्मिक कर्मकांड की चक्की में पिस रही थी, उसी तरह मुस्लिम जनता इस्लाम की कट्टरता और कर्मकांड की चक्की में। इन दोनों के ऊपर राजसत्ता और शोषण का चक्र चल रहा था। यही देखकर कबीर ने कहा होगा-

चलती चक्की देखकर, दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय॥

उस कठिन समय में भारतीय मनुष्य की मनुष्यता खतरे में थी। वह हिंदू या मुसलमान होकर अपनी चेतना और संवेदना को धर्म के हाथों गिरवी रख कर ही बच सकता था। वर्णव्यवस्था और सांप्रदायिकता ने मानव समाज को खंडित किया हुआ था। धर्म का आडंबरकारी रूप धर्म के वास्तविक स्वरूप का स्थान ले चुका था। अभिजात्यवादी प्रवृत्तियों ने मानव मानव के बीच की दूरी को और गहरा दिया था। ऐसे में कबीर ने अपने काव्य के माध्यम से न सिर्फ मानव एकता को स्वर दिया बल्कि यह उद्घोषणा कर डाली कि 'साईं के सब जीव हैं, कीरी कुंजर दोय।'

ऐसे समय में एक ऐसे व्यक्ति की जरूरत थी, जो उस काल के भारतीय समाज की समग्रता को जानता हो, साथ ही मनुष्य की मनुष्यता में जिसकी अटूट आस्था हो। ऐसे ही व्यक्ति थे कबीर। उनके काव्य में उस समय की जटिल स्थिति का बोध है और उसके

CS Scanned with CamScanner